# श्री योग माया पूजन पद्धति

संग्रह कर्त्ता

योगी भूलानाथ योगीआश्रम, उत्तरकाशी

प्रकाशक

योगी युवक संघ उत्तरकाशी

प्रथम बार–१००० भेंटा सवा रुपया

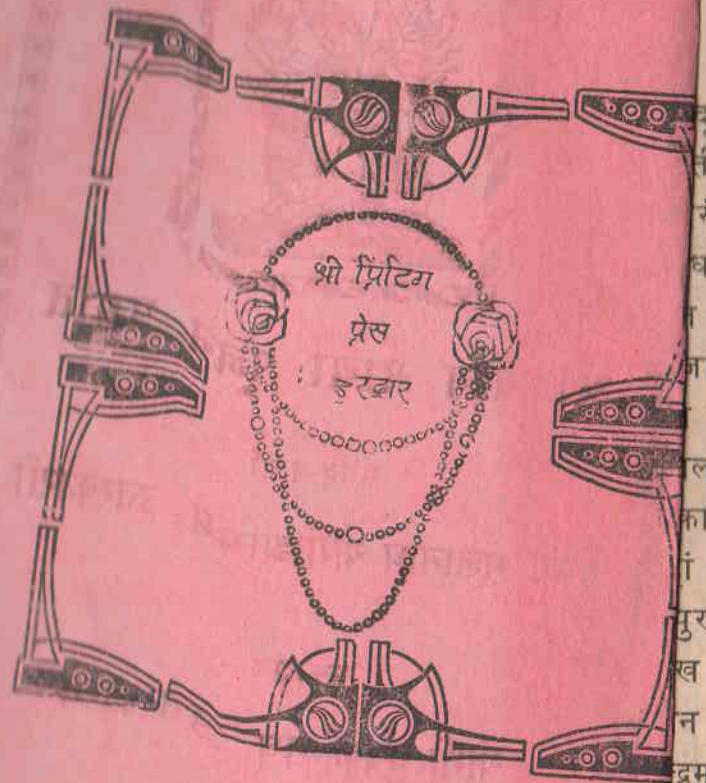


* ॐ श्रीगणेशायनमः *

ओं नमो आदेश गुरु जी को पहली पूजा अलील
जी नाद पाती सर्व देवत्यां मिल थापना थापी
ी मुक्ती ततसार अलख उतारे पहिले पार भैरों
री जोत जागी कलश रिआ भरपूर चौंक पुराउ
धराउ बरसो ततसार फुलधरो ध्यानधरो शब्दों से
जगाउ जागी अखण्ड भई परचण्ड भण्डारी भंडार
ागे टैलुआ चूर्मा बांटे शब्दों की घनघोर गत में
छाः बोले ज्ञान पुरी ऋद्ध सिद्ध भंडार भरपूर करे
लाज महामाया पैले ओंकार जोग जुक्त का, दूजे
कार मोक्ष मुक्त का, तीजे ओंकार थापी धर्मसाल
ां बैठे महेश्वरा धूप दीप ले जोत जगाई जहां बैठी
ुरा माई माता धरती पिता आकाश चन्द सूर्ज दोभरे
ख धर्नपाट धीरधाया अकास पाट सिर पर छाया
न पाट सिर पर बाजे इन्द्र पाट सिर पर गाजे
द्रमा पाट सर्व पर चांनणा सूर्ज पाट सोंरिया करंत
है अलख सात पाट कहां होते पदम पाट कहां होते
लख आप कौण होते कोटवाल कौण होते भंडारी
ौण होते जति कौण होते सती इकी सौ ब्रह्मांड

होते पद्म पाट हूअ होते अलख आप ब्रह्मा होते कोट-
वाल विष्णु होते भंडारी शिवजी होते जति उमादेवी
पार्वती होती सतिः शिव नर पूजिते पंच तत संख जुग
यतीक जोत ।

ओं नमो आदेश गुरु जी को आदेश ओं हुकम से
रची धरतरी हुकम से रचे अकाश हुकम से रची मेरू
मेदनीगिर पर्वत कैलाश हुकम चलाया श्री ईश्वर आदि
नाथ हुकम से पांच तत्व का भया प्रकाश हुकम से
गादी गोरक्षपीर हुकम से शक्ति आद ततबीर हुकम से
ब्रह्मा भरदीनी साख हुकम से हनवंत बीर चलाई हांक
हुकम से भंडारी ऋद्ध सिद्ध पाई हुकम से टैलवा टैल
कमाई हुकम से अंत चक्रपूर हुकम से गत में बरसे नूर
हुकम से भैरों परकाश भैरों बाला सुन्दरी के पास
केसर हुकम पीर मुख चले हुकम बिन मथन न हले
टैलुवे केसर मथकरी त्यार जुगती चढ़ी देव दरबार
केसर सुरती है जग मेसा आपे गुरु ते आपे चेला जुगती
संग कौण २ आय ब्रह्मा विष्णु महादेव पाय जुगती
संग चन्द्र सूर्ज दो तपे निरधार जुगती संग धर्मराजा
बरम गुसाई जी ले उत्पन्न भयो सकल सृष्ट संहार
टैलुआ ठाडा दो कर जोड़ देव दरबार हुकम होय
अलख पुरुष का टैल करूं दरबार कर पवित्री गल



गिरेवान टहल करूं गत की सर्व जोत का करो ध्यान
पहला पात्र धर्ती माई किन्नर गण गंधर्ब देवता चार
जुगों की थापना थपाई दूसरा पात्र श्री माई सुन्दरी
जी को चढ़े हीरे माणक मोती रत्न ज्वाहिर से पत्र
पूरे तीसरा पात्र श्री भैरव जी को चढ़े लख चौरासी
जीआ जून चरबण बोलिये तेल सिन्दूर की पूजा भैरव
जी को चढ़े चौथा पात्र कूण्डे में आवे पांच महेश्वर नौ-
नाथ चौरासी सिद्ध बवंजा बीर चौसठ जोगण तैंतीस
करोड़ देवता सब कूंडे में समावे पंजवा पात्र गुरु
बिचार सत सत्त शब्द ले उतरो पार गादी बैठे श्री
शंभू जती गुरु गोरक्षनाथ मन में करत बिचार सार
की छुरी अमृत की धार जो प्रमाण चीरा दिया सकल
सृष्टि संसार ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र चार वर्ण को
कौलीदीनी सबको किया संत कौली आवे कौली जावे
कौलीगत मैं जाय समावे जेकर कौली बरसे आप सत २
अमरापुर पावे न माई न बाप छेवा पात्र माई जोगनी को
दीजे नौगरही दहिने कर लीजे नौनाथ का पत्र पूरीजे
तीन अग्न तृप्त कर लीजे दो कर जोड़ जोत जगाऊ
सप्त ऋषि हृदय में ध्याऊ ग्यारा रुद्र की पूजा करी
जे दस दिगपाल का ध्यान धरो जे चार वेद का पाठ
करी जे षट् रस का त्याग करी जे भैरों सुन्दरी गत

भंडार चार साखिये मिल जोत जगाऊ अखंड़ी भई प्रकाश सतवा पात्र सतनाथ ब्रह्मा को दीजे आवो श्री सत नाथ ब्रह्मा जी बैठो गुरु बिचार के पास असंख जुगा की भर दीजे साख आठवा पात्र बीरवंकनाथ को दीजे अठारा वर्ण की हांक सुणी जे अठारा वर्ण का इको प्याला अलख जगावे बीरबंकनाथ चेते हनुवंत बाला नौवां पात्र कुबेर भंडारी सर्वगत की ऋद्ध सिद्ध सारी सर्वगत का इको रूप ऐकोएक पुरुष अनूप आद अन्त बीज संचरे बाला सुन्दरी की पूजा सत सत श्री शम्भू जती गुरु गोरक्षनाथ जी करे दसबा पात्र गत में फिरे अजर बजर अम्बर अघोर बिरला साधू कोई नर जरे इकादश पात्र टैलवे को दीजे दो कर जोड़ टैलवा लीजे कर लगावे गुरु बिचार टैलवा चेते गत मझार मूल द्वार से बंक उठावे दसमें द्वार की खबर बतावे दसमें द्वार का उलटा ख्याल सर भरिया नीर बिन पार सोई नीर जोगी जन पीवे सूई धागे बिन खिथा सीवे सीवत २ लागे जुग चार पहन खिथा होय भवसामर से पार अमर लोक की क्या निशानी हुकम होय अलख पुरुष का ज्ञान कथे सत सत श्री शम्भू जति गुरु गोरक्ष नाथ जी निरवाणी द्वादश पात्र अंत को दीजे दो कर जो अन्त कर लीजे जो आद सोई



अन्त ईश्वर गौरा थाप्या भगवन्त ईश्वर गौरा करे बिचार सत २ भाखन्ते श्री शम्भू जति गुरु गोरक्षनाथ जी ओं मूल द्वारे सिद्ध गणपत जी का बासा चतुरदल कमल करे निवासा मेरु डंड जे सूदा करे नाभ कमल में सुरती धरे षट् दल कमल ब्रह्मा जी का बासा श्री सनकादिक आवे जरे अष्ट दल कमल विष्णु जी का बासा कण्ठ द्वारे शिव जी का निवास षोड़श दल कमल शक्ति का बास ओंकार ज्योति प्रकाश सहस्र दल कमल निरंजन बसे शिवशक्ति मिलमेला बसे खेचरी मुद्रा मुख बसे वैखरी करे निवास जोगी अनभैबोलिया बैखरी करे निवास जोगी अनभैबोलिया बैखरी के अभ्यास जोगी वाय संकोच न करे द्वादश ले कुम्भक में धरे षोड़स अंगुल पूरक कहावे रेचक शने २ फिर आवे बारा सूर्ज सोला चन्द जो न जाने सो नर अंध– एड़ा पिंगला सुखमण मेले सोहं हंस निरन्तर खेले त्रिकुटी महल झरोखे बास मन पवन का सुरत मिलाप सोहं हंस अजपा जाप सकार के मध्य में जोगी करे निवास उन्मन सूं लागा रहे द्रड़ कर जोग अभ्यास भूचरी मुद्रा नासा बसे स्वास घोड़े असवार जोगी आठों पहर में स्वासों करे निवास चाचरी मुद्रा चक बसे जहां आठों पहर निवासधर्ण गगन के मध्य में

रवि शशि सोहं परकाश गोचरी मुद्रा श्रोणी बसे जहां सुरती करे मिलाप स्वाल शब्द की धुन में होत शब्द प्रकाश उन्मुन मुद्रा उर्ध बसे जहां आठों पहर निवास उन्मुन सू लागा रहे द्रड़ कर योग अभ्यास पांचों मुद्रा यह कही छटवी गोरक्षनाथ महा मुद्रा छटी कहों सदमें द्वार की बात महा मुद्रा छटवी बसे जहां निरंजन नाथ जहां योगीजन जाय के होत अश्चरज हैरान नाद बिन्द हूआ मिले शिव शक्ति मिल जाय रज बीरज ऊपर चढ़े तत मो तत समाय चक्र धरती चक्र अकास जागी जोत भागी छोत चौदश भया उजाला वाला चक्र पूजते सत सत श्री शंभू जति गुरु गोरक्षनाथ जी बाला महादेव पार्बती श्री आदनाथ घटे चंदा घटे सूर घटे गंगा भरी भरपूर अकास तारा पाताल घट ज्योति लिंग नमो स्तुते ब्रह्म हत्याटले अमृत हो पड़े २ अंबृतं २ कुरु २ स्वाहा आदका जोगी जुगाद की माया सत का जोगी वजर की काया करे २ न करे तो भीं बाहर भीतर कभी न मरे एकांगन गंधर्व जाया छीजे नां उपजे विन से न काया शब्द होय कोल तां काल ना खाया एता हुकम जाप सम्पूर्ण भया श्री शम्भू जति गुरु गोरक्षनाथ जी ने गत गंगा को पढ़ कथ के सुणाया



श्री नाथ जी की चर्ण कमल पादुका को अमस्ते २ नमस्कारं ॥

## अथ जाग्रत पूजा विधान

ओं देव द्वारे जावणा संग ना लीजे कोय ।
पाछे पांव ना मोड़िये सत्गुरु करे सो होय ॥

## देव द्वारे समीपे प्रार्थना

ओं रूपे का देवड़ा सोने सूं जड़िया किवाड़ साधू आया आस कर खोलो धर्म द्वार ॥

टैलुवे का प्रश्न—ओं अबधू किस का बीज किसका तुखम कौन प्रसादे माग्या हुकम ॥

उत्तर—ओं अवधू शिव का बीर्ज शक्ति का तुखम गुरु प्रसादे माग्या हुकम ॥

कपाट प्रवेश समय—ओं गत गंगा में जाय के जतिगोरक्ष कूं आदेश कण्ठे बसे सरस्वति हृदयदेव महेश पग पगकी रक्षा करे गौरीनन्द गणेश ॥

## आसन का मन्त्र

ओ गुरु जी मन मारूं मैदा करूं करूं चकनाचूर पांच महेश्वर आज्ञा करे बैठूं आसन पूर ॥

## अथ भण्डार मन्त्र

ओं गणपत २ राजकुमार ऋद्ध पर बैठे गणपत आपदेवी पूजों केसर काफूर दोहरा कोट तेहरी खाई कंटक मार खप्पर में लीजे ऋद्धि टूटे नहीं विघ्न व्यापे नहीं हाजर २ गणपत की दुहाई गणपत पूजे अंमृतं सदा फल दीजे धर्म की डिब्बी पाताल का ठीया नौ नाथ चौरासी सिद्धां मिल भंडार किया भूरी पाली काली डिब्बी शिवजी के पास मड़ी मसाणी मैं फिरा गुरु हमारे साथ धरत की डिब्बी ब्रह्म कपाली ब्रह्मा विष्णु मिल अग्नि जाली नीचे २ आग ऊपर पानी तपे रसोई आद भवानी घ्रततो गणपत पूरे तत पूरे गणेश ऋद्ध सिद्ध तो श्री ईश्वर पूरे तव प्रसाद महेश अन्न पूर्णाय विद्महेमहा अन्न पूर्णाय धीमहि तन्नो अन्न पूर्नी प्रचोदयात् ।

## अथ क्षेत्रपाल संस्थाप्य

ओं प्रथमे भैरवदेव देवाय द्वितीये भूत विडारनं तृतीये रुण्ड मालं चतुर्थे क्षेत्रपालं पंचमें वावरा बिव-रालं षष्टमे महा बली सप्तमें अनंत कोट सिद्धों के आज्ञा वान अष्टमें बनारस जी के थान नवमें कमलनाभ



दशमें बृजनाथ एकादशे कालसैन द्वादशे बटुक नाथं ऐते भैरव जी के द्वादश नामसम्पूर्ण ।

## अथ आसन विधान

ओं नमो आदेश आसन मार सिंहासन बैठों, बैठों गुरु की छाया पांच महेश्वर आज्ञा करे तां शब्द गुरां से पाया थिर कर आसन स्थित कर ध्यान सत सत श्री शंभू जति गुरु गोरक्षनाथ जी बैठे गादी पर वान गादी ब्रह्मा गादी इन्द्र गादी बैठे गुरु गोबिन्द आओ बाल गोपाल तुम लागो पाव तब तुम पूजो ब्रह्मज्ञान ब्रह्मा की कूंची महादेव का ताला नरसिंह बीर भैरों रखवाला । इति गादी मन्त्र ।

## अथ योगनी मन्त्र

ओं उत्तर दिशा से जोगण आई आद कुवारी का उपदेश चौंक पूरे जोगनी रक्षा करे गणेश ऐ जोगण जुगत की जाणे चार जुग की पूजा एक जुग में आने आसण बैठे होमे काया सो जोगण प्रत्यक्ष महा माया ।

## अथ साखिया मन्त्र

ओं ब्रह्मा आय ब्रह्म से धर्म ले आये साथ पांच महेश्वर आज्ञा करे तां बैठो गुरु बिचार के पास ।

## अथ वीर मन्त्र

ओं चौथी पूजा असख जुग करे सत्य धर्म ले हृदय धरे तले धर्ती ऊपर आकाश पांच महेश्वर आज्ञा करे तां बीर बैठे माई योगिन के पास ।

## अथ भण्डारी मन्त्र

ओं आदका योगी जुगत की माया सत का जोगी बजर की काया काल नाग से फूल न फले हे धर्ती अनन्दी तेरा नाउ ऋद सिद्ध पुगाउ आसन दे बैसन दे ऋद्ध दे सिद्ध दे थांउ दे सिद्ध हमको ऋद्ध दे भरे भण्डार तन्नो धरती प्रचोदयात् ॥

## अथ अनन्त गादी

ओं गुरु जी छटी गट्टी कौन दिशा की बोलिये छटी गट्टी पाताल लोक की बोलिये पाताल लोक का कौन राजा कौन घोड़ा कौन असवार पाताल लोक का नीला घोड़ा श्री बासक राजा असवार में तुझे बूझूं बासक राजा जी यह लो कुञ्जी ताला खोलो देवपुरी दर्बार कलश थापता कीजिये पाठ मांडता कीजिये नौ कोटि ग्रह भान ताप्ता कीजिये जुमला जागता कीजिये



झट पट चढ़ दीदार दीजिये सांई को सलाम गुरु को प्रणाम जोत को जुहारी गत गंगा को हरनाम ॥

## अथ कर्म

ओं गादी पीर माई योगिन साखिया बीर भंडारी अनंत गत गंगा गत की जोत का हुकम ॥

## गत गंगा जोत प्रकाश 'खीरे'

ओं अन्न पूरे अनपूरी तत पूरी गणेश पांच महेश्वर आज्ञा करे तां जोत जगाय महेश ॥

## अथ गणपति पूजन

ओं कण्ठे बसे सरस्वति हृदय देव महेश भूल्या अक्षर ज्ञान का जोत कला प्रकाश सिद्ध गौरी नन्द गणेश बुध को बिनायक सिमरीये बल को सिमरीये हनुवन्त ऋद्ध सिद्ध को श्री ईश्वर महादेव जी सिमरीये श्री गंगा गौर्जा पार्वती माई जी तुम्हारे कन्त उमादेवी गौर्जा पार्वती भस्मंतीदेवी हिरख मन अगर कुंगू केसर कस्तूरी मिला कूपिया तिसते भया एक टीका अमर सेंचो जी जीव संचिया शक्त स्वरूपी हाथ धरिया नाम धरियो श्री गणपतनाथ पूता जी तुम बैठो स्थान

मैं जाका महावरण आवरण जावरण किसी को न दीजिये
अंकम मार पर संग लीजिये बरण खंड मध्य से आय
श्री ईश्वर महादेव छूटी ललकार ईश्वर देख बालक
क्रोप भरिया ज्यों घृत बसन्तर धरिया शिवजी आनी
मन में रीस फिरयो चक्र ले गयो सीस तीन भवन में
भई हलूल श्री गंगा गौजा पार्वती माई जी आ कहने
लगी स्वामी जी पुत्र मारिया तिसका का कौन बिचार
देवी जी मैं नहीं जानों तुमरा पूत मैं जानों कोई दैत्य
न भूत गज हस्ती का सीस लियाऊं काट आन अलख
निरंजन के पास बैठाऊं शंकर जी ल्याये हस्ती का
सीस श्री गंगा गोजा पार्वती माई जी करी असीस
जब गणपत उठते खेल करते महिमा उवरते गणपत
बैठे थान मकान उत्तर, दक्षण, पूर्ब, पश्चिम ल्याये श्री
गंगा गौजा पार्वती माई जी के आगे स्वामी जी तुमको
सिमरे सोची मोची तेली तंबोली ठठिहारा गनिहारा
लुहारा क्षेत्र सिमरे क्षेत्रपाल अजूनी शम्भू सिमरे महा
काल लांबी सूंड बालक भेस प्रथमे सिमरो आद
गणेश पांच कोस ऋद्ध उत्तर से ल्याउ पांच कोस ऋद्ध
दक्षण से ल्याउ पांच कोस ऋद्ध पूर्ब से ल्याउ पांच कोस
ऋद्ध पश्चिम से ल्याउ दस कोस ऋद्ध अज गायब से
ल्याउ इतनी ऋद्ध सिद्ध दिये बिना ना जाउ श्री गंगा



गौजा पार्वती माई जी तुम्हारी माया प्रथमें एक दंतं
द्वितीये मेघ वर्णं तृतीये गज करणं चतुर्थे लंबोदरं
पंचमे विघ्न हरणं षष्टमें धूम्र रूपं सप्तमें बिनायकं
अष्टमें भालचन्द्रं नवमें शील संतोष दसमे हस्त मुखं
एकादशे द्वारपालं द्वादशे बरदायकं एते गणपत गणेश
नाम द्वादश सम्पूर्णं ॥

## अथ गणेश गायत्री

ओं साचा मंत्र सर्ब महेश मूल महल में बसे गणेश
गुदा चक्र पद्म चक्र कर्लो पाक हृदय परम जोत प्रकाश
गणपत स्वामी जो सन्मुख रहो हृदय ज्ञान अगम से
कहो अर्ध मुखी वेद कहंते सर्व कमल फेर कराओ ईड़ा
पिंगला सुखमण तीनों इक घर ल्याओ वंक नाड़ बैठ
घर आओ झिलमिल २ जोत जागी झिलमिली जोत
झिणाकार बाजा बाजे नादविंद का हुआ मेला तत
पिता का हुआ मेला कहे श्री नाथ जी सुणों औघड़पीर
त्रिकुटी समाध शिव सुन्न में लगाउ नाद बिन्द की गांठ
कर ब्रह्मांड चढ़ जाउ आत्मा परमात्मा का दर्शन घट
भीतर पाउ हंस परम हंस का दर्शन घट भीतर पाउ
गणेश का मंत्र सचकर ध्याउ मूल स्थान चतुर्दल
पांकड़ी तहां चतुर्दल मंत्र का बासा तहा गणेश देवते

का बासा गणेश देवता शक्ति स्वरूप मूसा बाहन गंगा गोदावरी करे स्नान कोई चढ़ावे जाण कोई चढ़ावे अजाण जाण चढ़ावे मोक्ष मुक्त फल पावे अजाण चढ़ावे अकार्थ जावे छे हजार जप सुमेर यज्ञ किये का फल तीन हजार जप की पूजा इतनी गणेश यायत्री जाप सम्पूर्ण भया अनन्त कोट सिद्धों में श्री शंभू जति गुरु गोरक्षनाथ जी ने कहा। धूपं दीपं नैवेद्यं कुसुमं सूत्र संधूर तिलकं अक्षितं पुष्पं फलं दक्षिणा सहितं पूजियामि । अथ मंत्र – ओं गं गणपतये नमः मंत्रं दशं जपेत् पुनः सर्वस्थाने सुमनं दद्यात् ।

## अथ केसर मन्त्र

ओं आई केसर मात की लीजे दो कर जोड़ पांच महेश्वर आज्ञा करे तां सिर कंटक का फोड़ इत्यर्थं ओं शिव घर आओ शक्त घर बैठो गुरु प्रसादी केसर चेतो माई केसर करों उपाय रक्षा करे श्री शंभू जति गुरु गोरक्ष नाथ जी ॥

## अथ मुर्छा मन्त्र

ओं सोहं धुंदू कारा पांच तत का किया पसारा



उल्टी पवन गगन में डोले गुरु परसादी मुर्छा हर हर बोले आया मुर्छा करों उपाय रक्षा करे श्री शम्भू जति गुरु गोरक्षनाथ जी ॥

## धूप वासना का मंत्र

ओं बासना बासल्यो थापना थापल्यो धूप जहां रूपदेव तहां पूजा अलख निरंजन और नहीं दूजा ॥ तिल जौ गूगल घृत खोपडा मिष्टान पंचांग धूप सिद्धों ने बनाया कूट काट डब्बी में कीना ऊपर कीनी चीनी चकमक पथरी जाल बाल लीनी उत्तर, दक्षण, पूर्ब, पश्चिम आसन कोना पहला धूप सत गुरु को दीजे हाथ जोड़ प्रणाम कर लीजे दूसरा धूप शिव शक्ति को दीजे ऋद्ध सिद्ध भंडार भरीजे तीसरा धूप धर्ती आकास को दीजे चन्द्रमा सूर्ज ले चढ़े बिमान चौथा धूप अठारा भार बनासपति को दीजे रूख वृक्ष की छाया लुडीजे पांचमा धूप पांचों मंदिरों को दीजे मोक्ष मुक्त फल लभीजे पाया भेद बौत बडिया एकाचीकाया बाल कुवारी शंभूनाथ नाथन के नाथ शब्द के सांचे गुरु गोरक्षनाथ सुंन माता अवगत पिता अलख गोत्र गौ का घृत गूगल की बास तृप्त हो श्री शंभू जति गुरु गोरक्षनाथ। पंच शब्दी कृत्य भंडारमध्ये कलश स्थाप्य।

## कलश जल मंत्र

ओं प्रथमं अलील नाम द्वितीय उदक मेवच तृतीय तौरेतवा नाम जल नाम चतुर्थे पंचमे पाणी नाम षष्ट में ब्रह्म नाम सप्तमे अचल नाम अष्टमे आब नाम नवमे नीर नाम दशमे वीर्य नाम एकादशे आदिनाथ द्वादशे कुदरतनाथ पाणी ब्रह्मा पाणी विष्णु पाणी देव महेश जो प्राणी पाणी का सिमरन करे सो प्राणी भौ सागरं तरे जल जागो थल जागो गुरु कैलाश साध अभ्यागत आय तुमारे पास विष्णवे नमः ३ बारं पठेत् परमहंस २ परमात्मा भगवान जले जिन्दा थले जिंदा आकास जिंदा पाताल जिंदा हैबी जिंदा होसी भी जिंदा जहा सिमरिये तहां हाजर हजूर योगी जाहिर जिंदा पीर जी को आदेश २ ॥

भंडार मध्ये कलशं संस्थाप्य भंडार जोत प्रकाशं कृत्वा केसर जुगती कूंडा संस्थाप्य मंडानं पूरयेत् ततो मंत्र ॥

ओं असंख जुगों पहले होती सुंत होती स्या नजार इक हजूर था इक मजूर था न थी धर्तरी न था अकाश न था पवन न था पाणी न था चन्दा न था सूर्ज न था सातकुली साहिर न था अष्ठ कुली पर्बत



न था नौ कुली नाग न था ब्रह्मा विष्णु महेश न था कंथा कंथी न था, जोगी अर भोगी न था, वेद अर बाणी होता आप स्यानिजार इक बून्द अगम को गई एक बून्द पश्चिम को गई, एक बून्द पाताले गई, एक बून्द चरणामत रही जब नाभ कमल ते निकली देवी आद कुवारी मुख से बोली बर प्राप्त करो मेरा सागर पाओ उठ देवी सुरत को साधो सुंन अधर दलीचा अरधंत पाट बैठा अविनाशी आद सुंनका करो बिचार अष्ट कमल छे पांकड़ी कमजासन मुख चार सुंन स्वरूपी ब्रह्मा धरते ध्यान जब देवी ब्रह्मा घर जावे ब्रह्मा का मंडान न भावे न ब्रह्मा धारे युग वरनन का साक न ब्रह्मा धारे माई न बाप कर्ष दिल में रहा समाई ध्यान स्वरूपी रीझे पश्चिम की छोड अगम की कीजे न माता मेरे अंग से लावे देवी छोडा चक्र दिया चलाई ब्रह्मा गया परले माही उठ देवी महा सुंनका करो बिचार नाभ कमल नौ पांखड़ी गरुड़ आसन मुख चार तत स्वरूपी विष्णु धरते ध्यान जब देवी विष्णु घर जावे विष्णु का मंडान न भावे न विष्णु धारे युग वरनन का साक, न विष्णु धारे माई न बाप कर्ष दिल में रहा समाई, ध्यान स्वरूपी बैठा रीझे पश्चिम की छोड अगम की कीजे न माता मेरे अंग से लावे देवी छोडा

चक्र दिया चलाई विष्णु गया परले माही उठ देवी
अमर सुंन का करो बिचार इक कमल बारा पांखड़ी
श्याम वर्ण नेत्र तीन परम तत का शंकर धरते ध्यान
जब देवी शंकर घर जावे शंकर का मंडान न भावे. न
शंकर धारे युग वरनन का साक न शंकर धारे माई
न बाप कर्ष दिल में रहा समाई ध्यान स्वरूपी बैठा
रीझे अगम पश्चिम की दोनों कीजे भली आईरी मेरी
माई दिया धर्म का पंथ बता असंग युग परलै गया जब
का मेष ऋष जात सपूता उन्हें बूझ सपूता उठ मेघा
घर जाओ सत का शब्द सही कर ल्याओ उठ देवी
कढ़ाई कार तैत्रीसे की फेरी आरण उठ देवी परम सुंन
का करो बिचार सत का शब्द सही कर बखशो शिव
शक्त के घर बास करो शक्त पियाले सहस्र रचे उठ
देवी हरी सुंन का करो बिचार शब्द कमल पर स्या
नजार शब्द कमल की सहस्र पांखड़ी रंग बहु रंग
सिद्धासन घाट घडंते नारायण ओं बीआद कुवारी बर
प्राप्त करो मेरा सारंग पाणी सत का शब्द सही कर
बखशो शिव शक्त के घर बास करो शक्त पियाले
संसार रचे सहस्र कला ले उटा सारंग धर नैन नजर
भर जोया पाटी सुंन भया प्रकाश शंकर घर आया
स्या नजार नहीं थी धर्ती जब काहे का पाट न था



[illegible] काहे की होती पायल न था अन्न तब काहे
[illegible] न थी, सर्व गत तब काहेका ठाठ न थी,
[illegible] का प्रकाश न था, कलश तब काहे की
[illegible] न थी धर्ती तब धीर्ज का होता पाट न था।
[illegible] प्रेम की होती पायल न था, अन्न तब भाव
[illegible] न थी सर्व गत तब पांच तत का होता ठाठ
[illegible] तब शब्द का होता प्रकाश न था कलश
[illegible] की होती धीर्ज सुरत निरत से लिंग उपाया
[illegible] और भग बनाया रूप बीज फूला धर्म दे दस
[illegible] किया बारा शक्त अगम से उठी पांच शब्द
[illegible] किया कौन बून्द से धर्ती किया कौन बून्द से
[illegible] किया, कौन बून्द से सती किया कौन बून्द से
[illegible], प्रकाश शब्द से केवल रवि चन्दा काला गोरा
[illegible] गोरक्ष धर्म ए मेष ऋष सावित्री, गायत्री,
[illegible], पार्बती, गंगा गोता नरमदा अरू सरस्वती ते
[illegible] आद्धवन्ती सिद्धवन्ती आद कुवारी महाकाली कौन
[illegible] ओं किया कौन स्वरूपी सोहं किया कौन
[illegible] ररांकारा कौन स्वरूपी आनन्द हुआ कौन
[illegible] गंगा गौरा वाचन्ते ने कलंक स्वामी जी सुनों
[illegible] देवा बीज स्वरूपी सोहं किया काल स्वरूपी
[illegible] किया जल स्वरूपी ररांकारा तत स्वरूपी आनन्द

सुश्रा जोत स्वरूपी गंगा गौरा वाचन्ते ने कलंक स्वामी सुनो अनघड़ देव ब्रह्मा विष्णु महेश ने कलंक नार सदा जी संबल देह धरा ध्यान शिव बून्द की धर्ती किया शक्त बून्द का अकास किया सांव बून्द की शक्ति किया जोत बून्द प्रकाश सुर तैतीसै का मेला किया माधर्मरचाया उठ देवी सत का झेलो हाथ अजरा जरे श्री पी पीये पियाला फेर भरे तोडा भग सदा २ कर छड़ा सन्त एता मूल मंडान का जाप सम्पूर्ण भया । शुन्य की गादी में बैठ स्या नजार ने कहा जपंते जाप कटंत पाप अलख निरंजन आपे आप ।

## अथ पाट का मन्त्र

ओं धर्म तो माता कर्म तो सती गोरक्ष तो जती बीज तो बनास्पति मनसा तो जोगनी दोलते का नाम अजरा जोत का नाम अनूप सत युग मध्ये कौन कौन जोत बोलिये शिव पुजन्ति धर्मवन्ति लाभवन्ति इतना पाट जाप सम्पूर्ण भया प्रैलाद की मण्डली में बैठ कर श्री शंभू जति गुरु गोरक्षनाथ जी ने कहा ॥

## अखण्डी सस्थाप्य महा माया मन्त्र

ओं असंख युग युगंत योग आद जोत युगाद जोत आवे अविनाशी न हले न चले न डिगे न डोले न भखे



न बखे आप निरंजन ने कही कहई कहो सिद्धो जोत कहां से आई गुरु के बचन धर्णी के शब्द से आई आओ सिद्धो भरलो साखी सत सत् श्री शंभू जति गुरु गोरक्ष नाथ जी ने भाखी । उत्तर दिशा से धुंदू कारा जोत जगाय किया जैं कारा सोहं शब्द ले उतरो पारा अन्न पूर्णा अन्न पूरे तत पूरे गणेश पांच महेश्वर आज्ञा करे तो जोत जगाय महेश जोगी को आदेश सन्यासी को नमो नारायण जंगम को शिव शरणा ब्रह्मा को नमस्कार सखेड़े को अलख जगे साध को सत्नाम गुरु गंगा को हरनाम ।

## इति आवाहनं मन्त्र

धूप दीप नैवेद्य सुमनस् वर सहितम् पूजयामो । पुनः गुरु बिचारं उत्थाय ज्योताग्रे उप विश्य कर साना प्रक्षाल्य अक्षतं गृह्य ॥

ओं बीज मंत्र होया प्रकाश देव देवत्यां किया प्रकाश आद रूपी कलश थाप्या निरन्जन जोत बैठे प्रलाद जी भण्डारी बैठे चन्द्रमा कोटबाल धर्ती का जप पाट रचाया नौ लाख तारा साधने तराया खंड २ दीप २ जोत जगाई साध कीजे मुक्त का काम बीज मंत्र मुक्ति का धाम बीज मंत्र ब्रिन लीजे नाम औघट

घाट घड़ीजे फेर त्रिकाले मध्याने अपंते सो नर निरंजन को लभंते श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश ।

## अथ धर्मराज गुरू भावली

ओं सेंचो २ धर्ती सेंचो, सेंचो आकाश सती सत मेरु मंडल गिर पर्वत कैलाश सतीसत चन्द्रमा सूर्ज दोनों तपे सती सत किया प्रकाश कथे शंकर गौरांजान गर्भ तत करो परवान श्री गौरजा वाचः हो स्वामी जी पहले पुण्य के पहले पाप, पहले गर्भ के पहले सांस पहले फोग के पहले फाग, पहले माई के पहले बाप पहले गुरु के पहले चेला, पहले रात के पहले दिन पहले चन्द के पहले सूर्ज पहले मूल के पहले डाल पहले धर्ती के पहले अकास पहले पबन के पहले पाणी पहले नाद के पहले बिन्द पहले सुन्न के पहले ओंकार कथे शंकर गौरां जान गर्भ तत करो परवान श्री ईश्वरो वाचः हे गौरां देवी पार्वती जी पहले पुण्य पीछे पाप पहले गर्भ पीछे सांस पहले फोग पीछे फाग पहले माई पीछे बाप पहले गुरु पीछे चेला पहले रात पीछे दिन पहले चन्द पीछे सूर पहले मूल पीछे डाल पहले धर्ती पीछे प्रकाश पहले पवन पीछे पाणी पहले नाद पीछे बिन्द पहले सुन्न पीछे ओंकार कथे शंकर गौरा जान गर्भ



तत करो परवान श्री गौरजा वाचः हो स्वामी जी कौन मासे नेवल नीर कौन मासे पलटे खीर कौन मासे रक्त का गोला कौन मासे बांधे विध्रे कोन मासे थान थगितर कौन मासे जोग सम्पूर्ण कौन मासे धात की काया कौन मासे नौनाड़ी बहतर कोठा चौरासी संन्यास सवा हाथ का हाड कौन मासे नरपति नर ने लिया अवतार कथे शंकर गौरा जान गर्भ तत करो परवान श्री ईश्वरो वाचः हे गौरादेवी पार्वती जी पहले मास में जल नीर दूसरे मास पलटे खीर तीसरे मास रक्त का गोला चौथे मास मास बांधे विध्रे पंचमे मास थान थगितर छेवे मास पलटी जोत सप्तमे मास जोग सम्पूर्ण अष्टमे मास सर्वधात की काया नौवे मास नौ नाड़ी बहत्तर कोठा चौरासी संन्यास सवा हाथ का हाड दसमे मास नरपति नर ने लिया अवतार कथे शंकर गौरा जान गर्भ तत करो परवान श्री गौर्जा वाचः हो स्वामी जी मुखे वाक बाणी वागेश्वरी मन पवन दासिनी उडंत कौली झडंत कौली अदृष्ट कौली न माता गुरु भावली इत्थे उत्थे बजर की काया सुफला बीज बीजते इक्की हाथ की आन्दरां अठारा अंगुल का कलेजा बारा अंगुल का बजरी भण्डार पंदरां अंगुल का छिकरा नौ अंगुल की तिली पंच अंगुल का पिता

कथे शंकर गौरा ज्ञान गर्भ तत करो परवान श्री गौजी वाच: हो स्वामी जी बत्री दन्द चौदा पसलियां त्रैअंगुल मुख की फाड़ी ईश्वर जोगी भूले न चूके सूर्ज जाके संग रमै गुरु जी इस काया अन्दर चार पात्र बोलिये कौन २ चार पात्र बोलिये सिद्धं स सिद्धं अतीतं सुपात्रं चार पात्र बोलिये गुरु जी इस काया अन्दर चार वेद बोलिये कौन कौन चार वेद बोलिये ऋगवेद, यजुर्वेद, श्यामवेद, अथवर्णवेद चार बोलिये गुरु जी इस काया अन्दर चार कुरान बोलिये कौन २ चार कुरान बोलिये अमूर, जमूर, अकुरान, फकुरान चार कुरान बोलिये गुरु जी इस काया अन्दर सात समुद्र बोलिये कौन २ सात समुद्र बोलिये प्रथमे अलील समुद्र, द्वितीय खीर समुद्र, तृतीये रेग समुद्र चतुर्थे धूड़ समुद्र, पंचमे मन समुद्र, षष्टमे खारा समुद्र सप्तमे रत्नागर समुद्र एते सात समुद्र बोलिये घटे ब्रह्मांड मंडे सूर्ज फिरे खंडे खंडे हृदय चार खाणी चार बाणी चंद सूर्ज पवन पाणी जहां २ साध तेरा होवे शिवपुरी में बास हमने कीनी जुगत महाराज करे तेरी मुक्त ऐती राजे धर्म जी गुरु भावली सम्पूर्ण ।

## अथ अमर बाला

ओं अमर बाला अमर से उपज्या मन भीतर गुरु



शब्द हमारा, सुरत निरत का करो बिचार, सत युग द्वापर त्रेता कलयुग जुग २ देवी जी तेरा प्रताप, श्री नाथ जी आचार्य गंगा जोगन ब्रह्मा साखिया हनुवन्त वीर श्री विष्णु नारायण जी भंडारी भरथरी टैल कमावे, निर्वाण जोत कीनी प्रकाश, हुकम गुरां के केसर मथिया, सोने का कलश थपाया, मोतियां का चौक पुराया, केसर हाथ ले शिवशक्ति की भेट चढ़ाया कंगणा हाथ बंधाया पान सुपारी तांदुल वस्त्र ऐ पुतले की भेट चढ़ाया, काम क्रोध तज चल्यो प्राणी, सकल कुटम्ब त्याग सत की पौड़ी पगधरिया ऐ वाक गुरु गोरक्षनाथ जी ने करिया, क्या योगी क्या संन्यासी सब अमरापुर तरिया ॥

## अथ बीज बाला

ओं बीजं ओं आद विष्णु पहला विष्णु अमर जोत अमर बीज अमर की काया, रत्ती से तोल नेत्रों में पाया, गुरु ईश्वर नारायण राह बताया, न है पाप न है छाया न है ब्रह्म न है काया, न था अजपा जाप, अतोल ले सिद्धों ने बाला बनाया, एतेक राग परमहंस सोहं २ एता बीज बाला महादेव पार्वती को सुनाया।

ओं नमो आदेश गुरु जी को आदेश ओं पवन २

की बत्ती, माता गुरु पिता पती झरे बाला पलटे काया
बज्र लेप कहां से ल्याया, गौ मुख धारा मेघधारा जहां
ते ल्याया डिगंबरी बाला तपत अलील जप जत काया,
बूढ़ा जपे काल न खाया, बाला जपे काल न खाया लो
मुख पानी बज्र मुख काया, श्री नाथ जी अघोर
चलाया ले बाती सन्मुखभये सुरत पलीता पाया बंक
नाल के आसरे सूतादेव जगाया, ले पोथी सनमुख भये
अघोर जाप जपाया, अघोर २ महा अघोर, जल
अघोर थल अघोर, पवन अघोर पाणी अघोर, धर्ती
अघोर आकाश अघोर, चन्द अघोर सूर्ज अघोर, नौ
लख तारा अघोर, माता अघोर पिता अघोर संख
समाध अघोर देहरा मसीत अघोर, अघोर जरे वाचा
फुरे, जरे काल क्रोध पांच नाद की मुद्रा जरे, बांधे
बज्र लंगोट देही का पारा जरे जरे पवन की ओट,
औगड़ की छड़ी जरे जरे काल की चोट, अघोरा जरे,
अभषभषे उलटी करे कमंद कन्ठे तो सरस्वति वसे
हृदय बसे देव महेश, नाभी तो तृकटा बसे मूल बसे
गणेश । अमरी २ अमर कन्द अमीरी बांधे चौसठ बंध
सोने की ईंद्री रूपे का प्याला भर २ पीवे योगीश्वर
बाला, कची अमरी काटे रोग पकी अमरी सीझे जोग
पके न फूटे करे न बास, घट पिंड का राखा मछन्द्र जी



का गोरख नाथ, अघोराय विद्म हे महा अघोराय धी
महीं तन्नो अघोराय प्रचोदयात् ।

## अथ सुर जीवन बाला

ओं नमो अकारे ब्रह्मा बकारे विष्णु सत शब्द
भेवे गुरु आय आप, वाया मूल २ पाया पान २ पर
आया फूल २ पर आया फूल २ पर आया फल फल
की छाया कौन बैठे आप आपका नाम क्या अदल
अदल कहां से आया सुन्न महा सुन्न से आया सूके ते
हरिया किया एका एकी निराभेखी अदल पाया जीव
कहे महादेव सुन पार्वती सुर जीवण बालां ले उतरो
पार ।

## अथ पुतले को फूका देने का मन्त्र

ओं नमो आदेश अजूनी शंकर महासुन्न महादेव
ओं बीजं सों शक्ति ओं गुरु सों ब्रह्म नृगेश्वर लिंग्ये
आकार, ओं इलीं बीजं अमरं असंख युग तत परकाश
पूरनहंस परमहंस आत्मा परमात्मा स्थूल अलख पुरुष
उचरंते बोलता पुरुष सब लहंते, अलख लखाई
विद्महे अलख लखाई धी महीतन्नो अलख लखाई प्रचो-
दयात् ॥ इति फूका ॥

## अथ उपदेश

ओं गौरी शंकर आप अलेख ब्रह्मा विष्णु को दिया उपदेश, सत का आसन दिया बिछाय सतगुरु बैठे आय, ओं सिंगी सो नाद बजावे तब ईश्वर गुरु मंत्र पावे अलख लखाई विद्महे महा अलख लखाई धीमही तन्नो अलख लखाई प्रचोदयात् ॥

## पुतला कूण्डे में संस्थाप्य-गुरू विचारं उत्थाय जोत अग्रे उपविश्य कर साना प्रज्ञाल्य अक्षतं गृह्य ॥ अखण्ड जोत के पगे लगने का ॥

ओं बीज मंत्र होया परकाश, देव देवत्या किया प्रकाश, आद रूपी कलश थाप्या निरंजन जी जोत बैठे अमिया जोगन बैठी ब्रह्मा जी साखिया बैठे विष्णु जी बीर बैठे, अनाद जी भंडारी बैठे चन्द्रमा कोटवाल धर्ती का पद्म पाट रचाया नौ लाख तारा साध ने तराया खण्ड २ दीप २ जोत जगाई साध की जे सुक्त काम बीज मंत्र मुक्त का धाम बीजमंत्र बिन लीजे नाम औगड़ घाट घड़ीजे फेर त्रिकाले मध्याने जपंते सो नर निरंजन को लभन्ते श्रीनाथ जी गुरु जी को आदेश ।

ओं दर्शन कीये सुख उपजे सुफल हमारी जात, पांच महेश्वर आज्ञा करे तां सीस निवाऊं मात ॥



ओं उत्तर दिशा से जोगन आई आद कुवारी का उपदेश । अक्षे बर्से जोगन माई रक्षो करे गणेश ॥

श्री देवी अग्रे समर्पनाद ओंकारं कृत्वा वाम कर दक्षिण बाहु मध्ये सपर्श दक्षिण कर देवता अग्रे सपर्श सर्व जोत प्रति आदेशा देशकृत्य ॥

ओं जोत २ महा जोत सर्व जोत सुन्दरी तुम को ध्यावे सीता कुन्ता द्रोपता पांचों पांडव तारा हरिश्चन्द्र राजा शिव पूजूं शक्ति पूजूं पूजूं गुरु के पांव, पांच महेश्वर आज्ञा करे तो लागूं बाला सुन्दरी जोत के पांव आदेश ॥२॥

ओं उत्तर दिशा भैरों खड़ा कान में कुण्डल सिर जटा मस्तक बिन्दा संधूर का राजा निवे प्रजा निवे शिव पूजूं शक्ति पूजूं पूजूं गुरु के पांव पांच महेश्वर आज्ञा करे तो लागू भैरों जोत के पांव ॥

ओं नमो आदेश सार २ महासार गादी बैठे श्री गोरक्षनाथ, श्री गोरक्षनाथ जी करें अलख की पूजा, एक अलख और नहीं दूजा शिव पूजूं शक्ति पूजूं पूजूं गुरु के पांव पांच महेश्वर आज्ञा करे तो लागूं पीर गादी के पांव ॥

ओं नमो आदेश उत्तर दिशा योगन खड़ी हीरे माणिक मोतियां जड़ी तू मेरी धर्म की माता मैं तेरा

धर्म का पूत ले प्रकरमा लागू पांव शिव पूजूं शक्ति पूजूं पूजूं गुरु के पांव पांच महेश आज्ञा करे तो लागूं माता जोगन के पांव ॥

ओं नमो आदेश साखिया बैठा साख पर भरे धर्म की साख, जैसी देखे तैसी कहे पाप पुण्य से न्यारा रहे शिव पूजूं शक्ति पूजूं पूजूं गुरु के पांव पांच महेश्वर आज्ञा करे तो लागूं साखिया गादी के पांव ॥

ओं नमो आदेश बीर २ महाबीर सूकी नदी चलावे नीर, काल कंटक को मारे तीर, साधां को खिलावे खाण्ड और खीर, तां मैं जाणा सांचा बीर, तले धर्ती ऊपर अकाश बीर बैठे माई जोगन के पास शिव पूजूं शक्ति पूजूं पूजूं गुरु के पांव पांच महेश आज्ञा करे तो लागूं बीर गादी के पांव ॥

ओं उत्तर दिशा कुबेर भण्डारी सर्वगत की ऋद्ध सिद्ध सारी शिव पूजूं शक्ति पूजूं पूजूं गुरु के पांव पांच महेशआज्ञा करे तो लागूं भण्डार गादी के पांव।

ओं नमो आदेश ब्रह्मा विष्णु महेश जहा के यम ने खैंचे केश, सब देवता लागे पांव तब तुम पूजो ब्रह्म ज्ञान, शिव पूजूं शक्ति पूजूं पूजूं गुरु के पांव पांच महेश्वर आज्ञा करे तो लागूं अनन्त गादी के पांव।



# अथ पांच शंख

ओं नमो आदेश गुरु जी को आदेश सखो सखी ईश्वरी वाचः हम तुम अलील पुरुष जी दोनों गुरु भाई नग नग देख दोनों लुड जाई, अखंड जोत जागे बिन बाती, अनन्त कोटि सिद्धां मिल थापना थापी कवन से ब्रह्मा कौन से देव, कौन धोती कौन जनेउ, कौन नाम ले पूजूं देव, मने ब्रह्मा पवने देव, अलील की धोती, शब्द जनेउ असंख नाम ले पूजो देव ब्रह्मा की पुतली विष्णु की डाली ईश्वर गौर्जा मिट्ठी डाली संखो समुद्रो न मुद्रो काया, ईश्वर पूछे श्री देवी पार्वती जी संख शथूर नारियल करो खाया, काया सो आद स्वामी जी प्रथमे सत द्वितीये धर्म तृतीये सत धर्म को बांधो धर्म की प्रतिज्ञा सो स्वामी जी उत्पन्न भई जल बिंब की काया, अरबद नरबद धुंदू कारा स्वाल शब्द नहीं ओं कारा, नहीं कोई अरन बरन की छाया नहीं कोई पांच भूत की माया, नहीं कोई शब्द कुल पातालं, कच्छुआदेव महेश्वरा जहां होती धर्म की नेकता धर्म की रक्षा पानी का विस्तार, प्राण पुरुष बैठे सत गुरां जी के पास शिव रूपीगौर्जा उत्पन्नी ईश्वर ले अरधंगे धरी, मर गई गौरा रह गया रुण्ड हाथ पांव पिंजर

का नला षट दर्शन मिल पहरे गला, अमृत कूपी आगे
भरो जल थल माता गौर्जा फिरी जल में होती मीन
की तांत पंच संख छटवां बीज मंत्र गायत्री जाप ले
उत्पन्नी माता गौर्जा पहला संख ईश्वर ने लिया ईश्वर
ने ब्रह्मा को दिया पढ़ गुढ़ ब्रह्मा पुस्तक किया चार
चौकड़ी इस जीवड़े को दिया निरभै जोगी इकोतर सौ
पुरुषा ले उतरे पार गायत्री सावित्री सरस्वती भगवती
चार वेदी चार पंगी चन्द्र कूची सोने सिंगो रूपे छुरी
त्रामे पृष्टी यम घण्टी वैह २ नदी वितरणी राख २
माता शंभू शिव गायत्री राख पिंड पडंत्या राख अघोर
पड़ंत्या राख ब्रह्मा विष्णु महेश्वर साख पड़े गुड़े सत
वादी जोगी पड़े गुड़े सत वादी साधू सरस्वती सत्य
वाचा प्रानी गंगा जमना सरस्वती काशी ओर केदार,
संख ढले शिव पूजिये प्राणी पावे मोक्ष द्वार ।

ओं दूसरा संख नारायण ने लिया धर्ती फोड़
पाताले गया, आगे बैठे कौन २ सुर नर मुनी जन
गंधर्व दूसरे तपसी निर्बधरो बहु सेवा करी नारायण
की तो कहां २ चले, ओं नारायण जी हम पूजें देव
शिव जी के पांव ॥२ ॥

ओं तीसरा संख सिद्धों ने लिया सिद्ध साधक
मिल कैलाश को गये आगे कौन २ बैठे मीन मछन्द्र



[illegible] गोरक्षनाथ लो सिद्धो संख संखादि करो ढ़ाल इस
[illegible] पिंड का करो उद्धार ॥ ३

ओं गुरु जी चौथा संख श्री देवी आद भवानी
[illegible] लिया, कानो कुण्डल गले वर्णन किया कौन सी
[illegible] आगम जाने, कौन सी देवी निगम जाणे कौन सी
[illegible] जपे जाप कौन सी देवी पड़े पिंड का करे उद्धार
[illegible] देवी आगम जाने, गौरां देवी निगम जाने तृकटा
[illegible] जापे जाप सर्वणदेवी पड़े पिंड का करे उद्धार ॥

ओं गुरु जी पंचमा संखसंखा ढाल, मा महेंली पुत्र
[illegible] करतार, कौन संख मठ देवल गाजे कौन संख समुद्र में
गाजे, कौन संख कानों में छाजे कौन संख अकासे सार
कौन संख अनन्त कोट सिद्धों को ले उतरे पार, अग्न
संख मठ देवल जागे अलील संख समुद्र में गाजे शब्द
संख कानों में छाजे पवन संख अकासे सार, सिद्ध
संख अनन्त कोट सिद्धों को ले उतरे पार ॥ ५ ॥

ओं पांचों मध्ये छटा समाई तिसकी रूप रेखा
वरनी नहीं जाई, आओ सिद्धो भरलो साखी सत सत
श्री शंभू जति गुरु गोरक्षनाथ जी ने भाखी पंच संख
जाप सम्पूर्ण भया अनन्त कोट सिद्धों में श्री शंभू जति
गुरु गोरक्षनाथ जी ने कहा ॥ ओं कौन संख से आयो
जीव कौन संख से स्थिर रहे शरीर, कौन संख से पावे

शिवपुरी में बास, कथंत गुरु गोरक्षनाथ अनन्त को सिद्धां ले उतरे पार । ओं सत संख से आयो जीव ध संख से स्थिर रहे शरीर गुरु बचनी पावे शिवपुरी बास, कथंत गुरु गोरक्षनाथ जी । जब सारी गत प लग जावे तो पीछे युक्त करनी कलश जोत समीपे संस्थाप्य ॥

ओं सप्त पाताले जला बिंब अधर धरा में शिला शिला पर गुरु निरंजन जी की चरण पादुका, पादुका पर जल, जल पर कमल, कमल पर शेष, शेष पर धवल, धवल पर भूम, भूम पर महा भूम पर सर्व गत बैठी आई आसन बैठी अनन्दी माई, तीन देव थापना थपाई ब्रह्मा विष्णु महेश ओं सोहं हंस निरंजन परमहंस मेरी काया एता बीज मंत्र महादेव पार्वती को सुनाया ।

ओं आद अलील अनहद पति, अनन्त कोट सिद्धां मिल थापना थापी जहां निरंजन की जोत प्रकाशी, जहां उत्पन्न कवल का फूल अनन्त कोट सिद्धां का मूल थापे ब्रह्मा थापे इन्द्र, सहस्र कला थापे गोबिन्द अखै लेउ सर्व सर्वत्र गत गंगा की कला कलश में, तले धर्ती ऊपर अकास कलश थाप्या श्री शंभू जति गुरु गोरक्षनाथ इति पुष्प तांबुल कंगणा संभूर तिलकं ॥



## अथ युक्ति केसर मन्त्र

ओं आई केसर मात की लीजे दो कर जोड़, पांच परमेश्वर आज्ञा करे तां सिर कंटक का फोड़ ॥

## अथ नीम मन्त्र

ओं आओ ब्रह्मा जो करो बिचार, असंख भुजा में ... जो बास तुम हो देवी हम हैं देव चलें करें देवल ... सेव बड़े २ स्वामी जी आय नाथ जी के उपदेश ... कलिया में पांचों बसे नीम हरिया नीम भरिया नीम सब संतन में तरिया जो नीम सूंकरे हेत, सो ... सत अमरापुर चेत जो नीम सूंकरे आंत उस ... देवी चामुंडा काली के दांत, एता नीम जाप सम्पूर्ण भया श्रीनाथ जी गत गंगा को पढ़ कथ के सुनाया ॥

अथ मीठी माई । मीठी माई सदा सहाई ॥

प्रथमे आदि पात्र उत्तर दिशा योगनी समीपे संस्थाप्य ।

## अथ दश बिल पात्रा

ओं आदेश गुरु जी को ओं पहली पूजा उत्तर की ... देवी नारदा शारदा सरस्वती ईश्वरी महामाई

भर पात्र पाटण पूजा रखीजे सम्या चक्री वीर तत
बीर मान महंत भंडारी कुठारी बाल गोपाल कोटवाल
राजा प्रजा का विघ्न हरीजे दाता दान पतीजे राजा
प्रजा का उदर भरीजे, जो बल मागूं सो बल दीजे,
कंटक मार खप्पर में दीजे, उमादेवी सहजा नन्दी
ऋद्ध सिद्ध पुगाओ सम्या मध्ये कौन रूप शिव शक्ति
मई कौन रूप, अमरा पुरगई कौन रूप शिव शक्ति
लागो पांव पूजा लो शिव शक्ति जी गुरु जी जीया
जन्त पशूनाम धर्ती मुख मंडते तुम कारन पूजा भई हो
देवी पार्वती जी मुझको दोष न दीजे एक जीव रक्षते
इक जीव भक्षते इक जीव सून्य इकजीव स्थूल इकजीव
मारे पाप न पुण्य जा जा जीया अकास तेरा होवे
शिवपुरी में बास अनन्त कोट सिद्धां मिल भरा ग्रास
बल भख, जती सती को रख पापी पाखंडी तेरा भख,
खीरे खण्डे मद्य मांसे घृत कूंडे सर्वरणधार बूंद मात्रेण
कोट कोटान भैरवान भैरवी भैर्वान तृपन्ते तृपन्ते ॥ १

ओं दूसरी पूजा दक्षण दिशा की कीजे तुलजा
देवी सरस्वती महामाई भर पात्र पाटण पूजा रखीजे

ओं तीसरी पूजा पूर्ब की कीजे कामाक्षादेवी
सरस्वती ईश्वरी महा माई भर पात्र पाटण पूजा
रखीजे ॥ ३ ॥



ओं चौथी पूजा पश्चिम की कीजे हिंगलाज देवी
सरस्वती ईश्वरी महा माई भर पात्र पाटण पूजा
रखीजे ॥ ४ ॥

ओं पंचमी पूजा पाताल की कीजे काली नाग
पद्म नागनीदेवी सरस्वती ईश्वरी महा माई भर पात्र
पाटण पूजा रखीजे ॥ ५ ॥

ओं छेवी पूजा दिल्ली तखत की कीजे चौसठ
जोगन पात्र भरीजे भर पात्र पाटण पूजा रखीजे ॥ ६

ओं सप्तमी पूजा आकास की कीजे इन्द्र इन्द्राणी
देवी भर पात्र पाटण पूजा रखीजे ॥ ७ ॥

ओं अष्टमी पूजा अष्ट भैरों की कीजे मद्य मांस
खप्पर भरीजे भर पात्र पाटण पूजा रखीजे ॥ ८ ॥

ओं नौवी पूजा नौनाथ चौरासी सिद्धां की कीजे
खीरे खण्डे पत्र पुरीजे ॥ ९ ॥

ओं दशमी पूजा दसों दिशा की कीजे श्री शम्भू
देव उमादेवी पार्बती सरस्वती ईश्वरी महामाई इति
(दस बिल पात्रा)।

श्री आदनाथ उक्तम् – ओं नमो चक्र अग्रं
पांच पात्रं पुना।

## मन्त्र कौली

ओं कौली आई मात की लीजे दो कर जोड़

आगे पांच महेश्वर पीछे देवी देवता तीस करोड़, करे कौली मुखे बाना हिर्दे जपो तपो श्री सुन्दरी बाला, ओं कौली आवे कौली जावे कौली गत गंगा में समावे सुगरा होके कौली चेते इकोतर सौ पुरुषा ले उतरे पार, नुगरा होके कौली चेते गत गंगा के भार, आई लेजा बरसे धर्ती निपजे अकास साधा संता ने चल बास आद का पंथ सत की कमाई साधां पार त्रुठी आद शक्ति महा माई ॥

## ऋृष मन्त्र

ओं निरंजनी निरा रूपी सोई जोत स्वरूपी बैठ सिद्धासन देवी जी ऋृष मन्त्र सुनाया अचार बिचार ब्रह्मा जी कर आद रचाया आओ ऋद्ध बैठो सिद्ध इलंगी रूप विलंगी बाड़ी सवा सेर बिष खाया दिहाड़ी जेती खाय तेती जरे तिस की रक्षा शंभू जति गुरु गोरक्षनाथ जी करे, सोई पीवे सोई जरे सोई अमर रहे कहो जी संत कहां से आया, अमरा पुरी से आया अमरापुर से क्या ल्याया, ऋृष मन्त्र ल्याया ऋृष मंत्र का करो बिचार, कौन २ ऋृष बोलिये आद ऋृष जुगाद ऋृष नारद ऋृष २ की कै पुत्री बोलिये सूरा ऋृष पारा ऋृष माता ऋृष सनकादिक २ ऋृष की कै पुत्री बोलिये मेदनी पुत्री अघोर गायत्री कौन भाषा



कौन भाषा शिव भाषा शक्ति शाखा ऋृष मंत्र अलख की भाषा, पढ़ ऋृष मन्त्र कौली खावे गुरु के बचन यमपुर जावे, बिना ऋृष मंत्र कौली खावे पिंड पड़े नरक में जावे एता ऋृष मंत्र जाप सम्पूर्ण भया चौरासी कोट सिद्धों मैं श्री शंभूयती गुरु गोरक्षनाथ जी ने कहा ॥

## अथ संख्या ढ़ाल अन्त कर्म

ओं काल, सोहं काल, महा काल, बज्र काल, नव मध्ये सुरकाल, पांच काल हमारे पास पांच काल हमारे गुरु हमरे कारण दुनिया मरे जरे सोंकार परम हम कौन जपन्ते शिव जपन्ते शक्ति कालाय बिद्य महे महा कालाय धी मही तन्नो कालाय परम हंस गायत्री प्रचोदयात् ॥ ओं तो शिव सोहंतो शक्ति आद तो बीज तत तो अलील परम हंस तत शिव ओं हर हर २ ॥

## अथ सादक कर्म

ओं सत की छुरी हीरों से जड़ी, पांच महेश्वर लिये बुला मस्तक धरिया हाथ, कौन मुख छुरी कौन मुख धार, अगन मुख छुरी पवन मुख धार चीरा दिया श्री ईश्वर आदिनाथ जी नामधरियो श्री करधरनाथ इतना चीरे का जाप सम्पूर्ण भया श्री नाथ जी ने गत गंगा को पढ़ कथके सुनाया ॥

## अथोपदेश

ओं सोहं इलीं क्लीं श्रीं सों श्री सुन्दरी बाला इत्युपदेशं ॥

ओं चेतन योगी ज्ञान का आधार, नाद मुद्रा का लिया । ओंकार शृङ्गार सिंगी सेली मेखली भूरी बाबरी काया भभकार दस्तार गुफतार मिल खाक मैं रहणा दिल कर पाक समझ बिचार, अंधेरा तोड़ बानण किया अंगन २ में सत गुरु मिले मन की भ्रमणा दई मिटा, गोदावरी क्षेत्र पर बैठ कर श्री शंभूयती गुरु गोरक्षनाथ जी ने अपने स्वरूप का धरिया ध्यान नाथ जी को आदेश ॥

## अथ धर्म संख

ओं नमो आदेश ओं सों ओंकारे त्रिभुवन नाथ अनाद धर्म के बांधो पांव, सत स्वरूपी पाई बुध कथो कथो श्री स्वामी जी आद धर्म की सुध तथा न होता धर्ती अकास तथा न होता गर्भ न सास, तथा न होता माई न बाप, तिस काले कौन कर्ता श्री शंभू योगी तुम्हारे दीवान तथा न होता देवी न देव तथा न होता पूजा न पाती तथा न होता जात न जाती, तपि मध्ये शंभू जोगी आये आप भया प्रकाश, धर्म संख



भडंता ईश्वर जोगी पडंता, पढ़ गुणंता सुफल फलंता पढ़ गुड़ संख रहा भरपूर सत धर्म नेड़े आवेंगे देवी पार्वती जी पाप परलो हो जावे दूर, पढ़ संख पावे मोक्ष सेवा पूजा करे शिवपुरी का लोक पहला संख सम्पूर्ण भया ॥ १

ओं दूसरा संख निरंजन देव अनन्त कोट सिद्धां मिल पाया भेव बाण मुक्ता आवे न जावे परम जोत मध्ये अजूनी शंभू रहा समाय, शंभू अजूनी आय आप आप भया प्रकाश, धर्म संख भडंता ईश्वर जोगी पढ़ंता पढ़ गुणंता सुफल फलंता पढ़ गुड संख रहा भर पूर सत धर्म नेड़े आवेंगे देवी पार्वती जी पाप परलो होता दूर पढ़ संख पावे मोक्ष सेवा पूजा करे शिवपुरी का लोक ॥ २ ॥

ओं तीसरा संख पुनीश्वर भया अदृष्ट अगोचर जाता रहा ऐ निसमार पछम लीना जरा मरन सिद्धां इस जीवड़े को दीना शंभू जोगी आय आप भया प्रकाश धर्म संख पूर्ववत् ॥

ओं चौथा संख अकासे फनियर जहाँ शब्द साखी सुनी पर शब्द सुनिया मन पाया भेव ब्रह्मज्ञानी सुध सुखदेव शंभूयोगी आय आप भया प्रकाश मंधसंख पू०

ओ पंचमा संख पंज मूर्ती भया अदृष्ट अगोचर

जाता रहा सत गुरु बचने होमी काया तहां श्री शम्भू जती गुरु गोरक्षनाथ जी ने शब्द बताया शम्भू योगी आय आप भया प्रकाश धर्म संख पूर्ववत् । ५

ओं षष्टवा संख बिचारो लोई तीन भवन में कौन कौन चीना चिसपत निसपत वाहि नध शंभू योगी आय आप भया प्रकाश धर्म संख पूर्ववत् । ६

ओं सतवां संख श्री देवी आद अवानी जी लिया, तहां २ देवी सहजे जानी, मायारूपी आप दिखानी, शंभूयोगी आय आप भया प्रकाश धर्म संखभडंता ईश्वर योगी पढ़ंता पढ़ गुणंता सफल फलंता पढ़ गुड संख रहा भरपूर सत धर्म नेड़े आवेंगे देवी पार्वती जी पाप परलो होजा दूर पढ़ संख पावे मोक्ष सेवा पूजा करे शिवपुरी का लोक ओं हर हर हर एक शत संख ढाले ।

ओं पंच संख का पुतला सत गुरु का उपदेश मूल चक्र रक्षा करे सिद्ध गौरीनन्द गणेश ओं हर हर हर ।

## अथ संख बाला

ओं बजर धर्ती बजर काया, देख लो जोत प्रमोद लो काया, सवा हाथ का पुतला बैठा अटल जोत की छाया, हाथ में कौली मुख में बाला हिर्दे जपो तपो श्री सुन्दरी बाला, इतना संख बाला जाप सम्पूर्ण भया



अनन्त कोट सिद्धों में श्री शंभूनाथ जती गुरु गोरक्षनाथ जी ने कहा ॥

## अथ पौड़ी

ओं पहली पौड़ी दीजे पांव, गणपत जी पूछें सहज स्वभाव, कहो प्राणी कैसे आया, कैसे जाना, कैसे करी कमाई, कौन तुम्हारी माता बोलिये कौन तुम्हारा पिता, कौन तुम्हारा गुरु गुसांई बोलिये कौन दानं देह स्थानं, कौन शब्द ले उतरवा पारं "प्राणी उवाच" । स्वामी जी सत से आया सन्तोष से जाणा सुफल करी कमाई, शील हमारी माता बोलिये धर्म हमारा पिता, छटवां दर्शन गुरु गोरक्षनाथ जी बोलिये जल खीर दानं दे स्थानं, पापना छुहन्ते जा जा प्राणी तेरा शिवपुरी में बास ।

ओं दूजी पौड़ी दीजे पांव ब्रह्मा जी पूछे सहज स्वभाव, कहो प्राणी कैसे आया कैसे जाना कैसे करी कमाई, कौन तुम्हारी माता बोलिये कौन तुम्हारा पिता कौन तुम्हारा गुरु गुसांई बोलिये कौन दानं दे स्थानं, कौन शब्द ले उतरवा पारं "प्राणी उवाच" हो स्वामी सत से आया संतोष से जाना, सुफली करी कमाई, शील हमारी माता बोलिये, धर्म हमारा पिता, छटवां

दर्शन गुरु गोरक्ष नाथ जी बोलिये, अन्न दानं देह स्थानं पाप ना छुहन्ते जा जा प्राणी तेरा शिवपुरी में बास ।

ओं तीसरी पौड़ी दीजे पांव विष्णु जी पूछे सहज स्वभाव, कहो प्राणी कैसे आया कैसे जाना, कैसे करी कमाई, कौन तुम्हारी माता बोलिये, कौन तुम्हारा पिता कौन तुम्हारा गुरु गुसांई बोलिये, कौन दानं दे स्थानं, कौन शब्द ले उतरवा पारं, " प्राणी उवाच" स्वामी जी सत से आया सन्तोष से जाना सुफली करी कमाई शील हमारी माता बोलिये, धर्म हमारा पिता, छटवां दर्शन गुरु गोरक्षनाथ जी बोलिये स्वर्ण दानं देह स्थानं, पाप ना छुहन्ते जा जा प्राणी तेरा शिव-पुरी में बास ।।

ओं चौथी पौड़ी दीजे पांव शिव जी पूछे सहज स्वभाव, कहो प्राणी कैसे आया कैसे जाना कैसे करी कमाई, कौन तुम्हारी माता बोलिये, कौन तुम्हारा पिता, कौन तुम्हारा गुरु गुसांई बोलिये कौन दानं देह स्थानं, कौन शब्द ले उतरवा पारं। 'प्राणी उवाच' स्वामी जी सत से आया संतोष से जाणा, सुफली करी कमाई, शील हमारी माता बोलिये धर्म हमारा पिता, छटवां दर्शन गुरु गोरक्षनाथ जी बोलिये, रजत दानं



देह स्थानं, पाप न छुहंने जा जा प्राणी तेरा शिवपुरी में बास ।।

ओं पांचमी पौड़ी दीजे पांव, श्रीदेवी आद भवानी जी पूछे सहज स्वभाव, कहो प्राणी कैसे आया कैसे जाना, कैसी करी कमाई, कौन तुम्हारी माता बोलिये, कौन तुम्हारा पिता, कौन तुम्हारा गुरु गुसांई बोलिये कौन दानं कौन शब्द ले उतरवा पारं। 'प्राणी उवाच' स्वामी जीं सत से आया सन्तोष से जाना, सुफलो करी कमाई, शील हमारी माता बोलिये, धर्म हमारा पिता छटवां दर्शन गुरु गोरक्षनाथ जी बोलिये, वस्त्र दानं देह स्थानं पाप न छुहंते जा जा प्राणी तेरा शिवपुरी में बास ।

ओं छटवी पौड़ी दीजे पांव धर्म राजा जी पूछे सहज स्वभाव, कहो प्राणी कैसे आया कैसे जाना, कैसे करी कमाई, कौन तुम्हारी माता बोलिये कौन तुम्हारा पिता, कौन तुम्हारा गुरु गुसांई बोलिये, कौन दानं कौन शब्द ले उतरवा पारं। 'प्राणी उवाच' स्वामी जी सत से आया सन्तोष से जाना सुफली करी कमाई शील हमारी माता बोलिये, धर्म हमारा पिता, छटवा दर्शन गुरु गोरक्षनाथ जो बोलिये अश्व दानं देह स्थानं पाप न छुहंते जा जा प्राणी तेरा शिवपुरी में बास ।

ओं सतवीं की पौड़ीदीजे पांव श्रीबाला गोरक्षनाथ जी पूछे सहज स्वभाव, कहो प्राणी कैसे आया कैसे जाना कैसे करी कमाई, कौन तुम्हारी माता बोलिये कौन तुम्हारा पिता, कौन तुम्हारा गुरु गुसांई बोलिये कौन दानं देह स्थानं कौन शब्द ले उतरवा पारं। 'प्राणी उवाच' स्वामी जी सत से आया सन्तोष से जाना सुफली करी कमाई, शील हमारी माता बोलिये धर्म हमारा पिता, छटवां दर्शन गुरु गोरक्षनाथ जी बोलिये गऊ दानं देह स्थान पाप ना छुहन्ते जा जा प्राणी तेरा शिवपुरी में बास।

## अथ बाला अमर गायत्री

ओं बाला जाया आपे आप बाला जाया माई न बाप वाला जाया एक ओंकार जोग जुगतां दूसरे ओंकार मोक्ष मुक्ता तीसरे ओंकार धूप दीप ले मोक्ष मुक्ता, धूप दीप कहां जोत जगाई जहां बैठे श्री शंभू जती गुरु गोरक्षनाथ जी आसा माई ओं सोहं महेश्वरी बाला जाप सम्पूर्ण भया अनन्त कोट सिद्धां में श्री शंभू जती गुरु गोरक्षनाथ जी ने कहा ॥ इतिबाला जाप ओं गुरु जी अखंडी कूची बैकुण्ठ धाम कैलाश स्वरूपी दे दर्शन निरञ्जनी जोत स्वरूपी ओं सोहं जपे अजपा



घर आवे, सों जोत का होया प्रकाश अमर गायत्री आपे अलख निरञ्जन आपे आप अमर गायत्री जाप सम्पूर्ण भया।

## जम फारखती

ओं खण्ड २ ब्रह्मन्ड बासा, चलो हंसा जहां निरञ्जन का बासा, जहां हंस धारा सुक्षम धारा प्रेम पलीता जीत जो न भर जून जूनी छोड़ अजूनी में आया अबजा रबजा, जबारिया, जथरीया, हैदरीया, नादरिया, कौलीया, कसाइया, मैणीया, ततबोरिया, अबदुलु गुलजाला एते द्वादश नाम फरेस्त्यों के बोलिये हिन्दु को राम राम मुसलमान को अल्लादस्तार तो नबी की कलमा तो महोमद का लेखा तो धर्मराज का आया हंस होया रुजू साहिब के दरबार जमे डन्डे राडोये जमे मुख से करी पुकार हंस चले घर आपणे जम के सिर दिया भार जहां अंचनापुर नगरी अमरापुर गाम शिव जी बसे समर्थ सुरत का सूरा अकल का पूरा ज्ञान का मूला, गुरु गोरक्षनाथ अवनाशी घट घट जोत प्रकाशी जम जंजीर जड गय गडकोट जीत्या ईलचील नागणी सों फट स्वाहा ॥ इति यम फारखती सम्पूर्ण ॥

## अथ यम जंजीरा

श्रों सोंहं दोऊ काल विस्तारा आखे योगी सब से न्यारा, मारू काल उखाडू भुजा, चौदा चौकी यम की तोडू हंसा ल्याऊ मोड़, हंसा को कहां बैठाऊं जहां सत गुरु की ठोड़, सत गुरु मिला पूरा मारया काल न जाय, सिर फोड़ कौन २ सन्त उत्पन्ने ब्रह्मा विष्णु महेश जिन यमा के पकड़े केस, धर्मराजा जी के यम बोलिये कौन २ यम बोलिये हैदरिया, नादरिया, कादरिया, जथरिया, कसाइया, मैणिया, ततबीरिया, अबदुलु, गुलजाला शिगाला, अबजाला, मुंह काला, एते द्वादश नाम फरेस्त्यों के बोलिये धर्मराजा जी के कुण्ड बोलिये येडा कुण्ड केडा कुण्ड, कुण्ड औलिया, धौलिया कुण्ड, लिंग कुण्ड, भग कुण्ड, ऐते कुण्ड बोलिसे द्वादश अक्षर हिर्दे में धरे लख चौरासी का फेरा टरे यही मेरा नाम यही मेरा थान जां जोत जहां परम जोत जहां हमारा बासा सत गुरु मिले पूरे, मिटी यम काल की आसा, यम जंजीरा किसने कहा गुरु गोरक्षनाथ जी ने कहा, गुरु गोरक्षनाथ जी ने किसको सुनाया सिद्ध मच्छेंद्र नाथ जी को सुनाया, जम जंजीरा पढ़ंते सुणंते, गोरक्ष मच्छेन्द्र अमर हुये कौन कौन हत्या बोलिये राज हत्या गोत्र हत्या स्त्री हत्या



बाल हत्या, गौ हत्या, सर्व हत्या टरन्ते गुरु गोरक्षनाथ जीरा या यम जंजीरा जाप सम्पूर्ण भया अनन्त कोट सिद्धों में श्री शम्भू जती गुरु गोरक्षनाथ जी ने कहा ॥

## अथ बीज बाला

श्रों अंगुष्ठ प्रमाणे तीसरा नेत्र त्रिकुटी में ठहराया सिद्धों काया न माया धूप न छाया बजर कुवारी तीन लोक की माया, जा ठहराई मारग मार्ग आवे मार्ग की छाया, अमार्ग का पुत्र बाला कहाया, जब सिद्धों गोरक्षनाथ जी ने गोरक्ष बाला कहाया, श्रों सोहं हमारी काया, एता बीज बाला जाप सम्पूर्ण भया अनन्त कोट सिद्धों में श्री शभू जती गुरु गोरक्षनाथ जी ने कहा । श्रों नमो आदेश सत गुरु जी को श्रों निरञ्जन निराकार अवगत पुरुष ततसार २ मध्ये जोत जोत मध्ये परम जोत, परम जोत मध्ये उत्पन्न भई माता शंभू शिव गायत्री विश्वनी विश्व मूर्ती पाताले ब्रहणी चतुर्वेदी मुखो दृष्टवा गंगा जमना देखे चन्द्रमा द्वति देवता ललाटे नक्षत्र मेष की माला दृष्ट शृङ्ग मेरु मेखला हिर्दे तैंतीस करोड़ देवता कुक्षौ सप्त समुद्र सागरा रोमावली ते अठारा भार बनस्पति के चार खाणी चार बाणी चन्द सूर्ज पवन पाणी धर्ती अकाश

पञ्च तत पिंड प्राण ले किया निवास सुंन निरालंब
दिया निवास, यति निरालंब जी के चरण कमल
पादका को नमस्कार नमाम्यहम् ओं निरञ्जन निराकार
अवगत पुरुष तत सार तत सार मध्ये जोत, जोत मध्ये
परम जोत, परम जोत मध्ये उत्पन्न भई माता शंभू
अजपा नाम गायत्री अभेद मण्डल भिदन्ती अछेद पाप
छिदन्ती अक्षय पोष करन्ती अपीर नीर पिवन्ती गंगा
जमना मध्ये जलन्ति बचने २ रुद्र ऋषीश्वर की वाचा
प्रति पालयन्ति ओं सप्तमें पाताल खरी, क्षेचरी,
मंचरी, भूचरी, सिद्धां आपसे थापी सोहं हंति महंति
जति निरालम्ब जी के चरण कमल पादका को नमस्ते
नमा म्यहम् ओं प्रभाते उत्पन्न भई माता शंभू शिव
गायत्री, रक्त वर्णी वृष वाहिनी रुद्रदेवता को पोषनी,
ऋद्ध सिद्ध वर दायनी, ओं मध्याने उत्पन्न भई माता
शंभू शिव गायत्री, स्वेत वर्णी हंस वाहिनी, ब्रह्मदेवता
को पोषनी ऋद्ध सिद्ध वर दायनी ओं संध्या उत्पन्न
भई माता शम्भू शिव गायत्री, श्याम वर्णी गरुड़
वाहिनी शंखचक्र गदा पद्म ले विष्णु देवता को पोषनी
ऋद्ध सिद्ध वरदायनी, फुरो तां ऋद्ध फुरो तां सिद्ध
ईश्वरो वाच जो जोगनी अजरन्त जो जोगनी बजरन्त,
षट सरस बरस की रक्षा उद्धरन्त, होमी शिव होमी



शक्त होमी घटे शिव होमी चतुर्मुखी ब्रह्मा बोलिये,
हिर्दे ते थान मुँह भुज शंखी नी देवी विष्णु देवता को
पोषणी, ऋद्ध सिद्ध वरदायनी ओं जल जल पर थल २
पर भौर नदी, भौर नदी पर भौर गुफा, भौर गुफा
पर शिवपुरी, शिवपुरी पर शिवताजपुरी शिवताजपुरी
पर ब्रह्म कवल, ब्रह्म कवल पर निरञ्जन कवल, निर-
जन कवल मध्ये उत्पन्न भई माता शंभू शिव गायत्री
अभेद मण्डल भिदन्ती ॥

ओं कार करन्ती आवे इकोतर सौ पुरुषा ले
अमरापुर जावे सोहं कार करन्ति आवे लख चौरासी
जीया जून को ले आहार चोगा पानी पिलावे, क्षीर
नीरनू पंच बस करनी आवे जपंत ब्रह्मा विष्णु जल
पवन पाणी षट दर्शन मध्ये गुरु खड़ा हाथ खड्ग
त्रिधारा क्या करेगा रूठा जगत हमारा चार चरण
पंजवा मुख अन्न महीश्वर जोगी अनन्त कोट सिद्धां
को पार ले उतरेगी माता शंभू शिव गायत्री श्रीनाथ
जी का चरण कमल पादका को नमस्ते नमस्कारम ।

ओं चार वेद ब्रह्मा पढ़े दस हजार योजन सुमेरू
धरती में गड़े साठ कोस लौ पौड़ी लोह की जा:
बैठीरा: क्रेत की चौकी क्या चीज बिना भेद वस्त्री
साठ कोस लग रङ्ग जस्त की क्या जमना जी में रूख

वृक्ष डाल कड़ी बांस की क्या दाता ने ऐसी बनाई, बासठ कोस धारा तांबे की ताके ऊपर ले काने खड़े गौरी पुत्र गणेश, हाथ में लई छड़ी साठ कोस रूपे सों जड़ी ताके ऊपर ले काने खड़े सप्तपुरी सोने सों जड़ी, सोलह लाख बहत्तर हजार हीरे लाल जड़ी जवाहर जा: पञ्च तत्व तीनों गुण न्यारो न्यारे छै दर्शन छानवें पाखंड नौग्रह, त्रय सन्ध्या चौबीस गायत्री, एते प्रमाणे किस विध जाणे ससमाले चक्र ताणे दरवाजे ध्रुव की चौकी बठाणे, तिसके नीचे ले काने लाय तारे चन्द सूर्ज दो बने खिलारे जहां आठ कुण्ड बीसों न्यारो न्यारे जा मे कोड़े फिर रहे काग करें फट कारे केती आवे केती जावे, केती भरीयम के द्वारे यम द्वारे यम राणी बैठी ब्रह्मा विष्णु महेश्वर ली एती, इस पर्वत गब्बे सिद्धो अमृत कुण्ड भरिया भर भर आवे बदल मपडे इन्द्र के अघाय मृत लोक से पौंचे मूहड़ा दिन सूं रात पुतला दस महिने दौड़े इति सुमेर पादका सम्पूर्णं ।

## ओं वैराट मन्त्र

ॐ वैराट मंत्र बैकुण्ठी बासा अमर लोकमें होत निवासा, अटल ध्यान महा चेतन जहां गुरु गोरक्षनाथ जी स्वामी जीं धरते ध्यान रो रो पंछीरा येरा एका पंथ



[illegible] ।। निर्भय नंचे नाम के काल खड्ग के सीस में [illegible] जाल डेरा करिया रुणंकार कीर की सेज में सेज [illegible] होत ओंकार की सेज ले मकड़ी कैसा जाल [illegible] को प्रणाम गुरां को नमाम साध को सलाम [illegible] गंगा को हरनाम ।।

## अथ ठीकरे का मन्त्र

ओं पढ़ो २ सुणो महेश्वरो करनी से उतरो पार [illegible] होय तां पौड़ी चढ़े बिन करनी कहो गुरु जी [illegible] तरे ओं ठीकरा नहीं कोई ठाठ है पांच तत का पाट है धरत मुख उत्पन्ना पवन मुख सूका अग्न मुख [illegible] सो ठीकरा सब सन्तन के आगे चला हाथ में [illegible]लावे राजा प्रजा को चितावे सिर पर धरे तां समाधि करे सूधा करे तां अमरापुर चढ़े ओं सोहं ठीकरा जाप सम्पूर्ण भया अनन्त कोट सिद्धों में श्री [illegible] जती गुरु गोरक्षनाथ जी ने कहा ।

## अथ समाध गायत्री

ओं आद की धरतरी अनाद की माटी सत का [illegible] शब्द से खाटी, ओं प्रथमे ओंकार उपाया, भूत का गुटका बनाया अलील परम हंस हुये प्रकाश जोत कला प्रकाश नौ नाथ चौरासी सिद्धां ने समाध गायत्री

का किया प्रकाश, ओं
गौरा माटी डाली आ
प्राणी को दीजे मोक्ष
दीजे साथ, यमराजा
कहां से आया कहां ज
कथंते धर्मराजा सुणंते
आया, सत का जोगी
कंच गले रुण्डन की म
पवन की काया, आद
महादेब पार्वती को सु

ओं धरती माई
ध्याई, मैं तेरा पुत्र तू
जाई, जहां बैठे धर्मरा
ऊपर षट् चक्र जहां
बनाई, सार का मस्त
जुगीश्वर अमर होय

ओं काने कुण्डल
उपदेश पहला पात्र मु

ओं किसका पूत
बैठा पाती, किस शब्द
से अमरापुर जाय, ओं

ब्रह्मे कही ईश्वर खुदाली ईश्वर
ओं ब्रह्मा जी करो बिचार इस
मुक्त फल द्वार ओं प्रथमे माटी
छे सहज स्वभाव कहो योगीश्वर
ओगे, कहां करो निवास प्राणी
ओं आद का जोगी अनाद से
बजर की काया, तले चक्र ऊपर
ाला हाड मांस की मड़ी बणाई
हंस परमहंस चिन्मयं सच्चिदानंद
णाया एती समाध गायत्री सम्पूर्ण
'आई' मैल मोती काड़ धर्म को
मेरी माई चार अंगुल की देही
राजा धर्म गुसांई तले षट् चक्र
श्वेत हाड़ शिव शंकर की मड़ी
क शिवशंकर की काया, जपो
काया ॥

सिर जटा आद कुमारी का
ख का पात्र रक्षा करे गणेश ।
किस का नाती, किस शब्द से
से रल मिल खाय, किस शब्द
शिव का पुत्र शक्त का नाती,



गुरु प्रसादी बैठा पाती, गुरु प्रसादी रल मिल खाय, गुरु प्रसादी अमरापुर जाय चेतो वरतो करो कमाई साधा पर त्रुठी आद शक्ति महा माई, भैरवी ओं ध्याया पात्र करो सुपात्र चेते नर सुगरा चातुर ।

## अघोर बाला मन्त्र

ओं सोने की इन्द्री रूपे की धार धरती माता तेरे को नमस्कार धर्म की धोती अलील का प्याला अजरी बजरी चेते गुरु गोरक्ष बाला धर्त की डिबी शक्त ने बाली ब्रह्मा विष्णु ने लकड़ी जाली, शिव ने रान्धी शक्त ने खाई, अन्न पूर्णा महा माई हाथ खप्पर गले रुण्ड माला शिव शक्ति जपो तपो श्री सुन्दरी बाला, ओं अमर बांधे अम्बरी बज्र बांधे काया, हाथ जोड़ हनवन्त खड़ा बांध ल्याऊं शरीर, सारा नौ मणसार भस्म कर डालो सोने की सुराई रूपे का प्याला भर भर पीवे भैरों मतवाला, भजो २ अलील भजो अनाद फुरो ऋद्ध फुरो सिद्ध भजो अलील गुसांई जी की चरण कमल पादका को नमस्ते २ नमस्कारं एता अघोर बाला जपे तपे, बारा कोस काल निकट नहीं आवे, ओं आद अलील पुरुष की माया जपो हक शब्द अमर रहे काया आद अघोर, अनाद अघोर श्री अघोर

पिण्ड अघोर, प्राण अघोर, शिव अघोर, शक्ति अघोर ब्रह्मा अघोर, विष्णु अघोर, चन्द्रमा अघोर, सूरज अघोर, मेरी बजर की काया जुगता सो मुक्ता, आवे सो जावे सिद्ध होय वहां काल न खाये एता अघोर बाला पढ़ कथ के टिल्ले बाल गुदाई लक्ष्मणयती को श्री गुरु गोरक्षनाथ जी ने सुनाया ॥

## अथ अघोर गायत्री

ओं जौ प्रमाण भक्षंते, तिल मात्रा तिलकं करन्ते आद धर्म पार ब्रह्म बाला श्री सुन्दरी बाला नमो स्तुते अघोर २ महा अघोर, ब्रह्मा अघोर, विष्णु अघोर, शिव अघोर, शक्ति अघोर, पवन अघोर, पाणी अघोर धरती अघोर, अकास अघोर, चन्द्रमा अघोर, सूरज अघोर, पिंड प्राण हमारे बजर अघोर, आदन्त साधंत अघोर मन्त्र स्थिरन्त, उठा हाथ की काया, आद का जोगी अनाद की भबूत, सत का नाती धर्म का पूत, बिंद होणा आई नाद, भूर नाद न किसे का धीयान, किसे का पूता पाणी सेत, न गुद गुद सेत, न हाड हाड सेत, न चाम चाम पड़े तां धरती माता लाजे पिंड पड़े तो सत गुरु राखे ऐसे पद को पुजन्ते योगी आद अलील अनाहद बरसे अमरी साधे अमर काया, बजरी



साधे बजर काया, हांक मार हनुवन्त आया लोहे का कोट घाव न आवे, रक्षा करे अचल बणखण्डी पीर, काला खिथा काला टोप काला है ब्रह्माण्ड, धर्म धूप खेवन्ते, वासना गई इकीसवें ब्रह्मन्ड, धर्म गुसांई जी धोती पाखालो, सतवें पाताल २, परम तत २ मध्ये जोत, जोत मध्ये परम जोत, परम जोत मध्ये उत्पन्न भई माता अघोर गायत्री अजपा जपा जपंति, पचास लाख कोट धरती मध्ये फिरन्ती, कुष्टी का कोड़ तरंति, अचल चल चलंति अभेद मण्डल भिदंति छिदंति अछिंत को पिवंति पीव २ करंति रुद्र देवता के बचने २ आपे के काज कुवारी आपे के पशु भरता तीनों जाय तीन पुत्र ब्रह्मा विष्णु महेश अमर रहे सेना सुमेर पटण सुनो देवी पार्वती जी आप कहे आप कहावे आप सुने आप सुनावे, पद्मावती पार्वती श्याम को सलाम गुरां को प्रणाम पण्डित को प्रमोद करी मूर्ख के हिर्दे न भावी फुरो ऋद्ध फुरो सिद्ध सत् श्री शंभू यती गुरु गोरक्षनाथ जी अनन्त कोट सिद्धां ले उतरेगी पार मुझ को भी ले उतरेगी पार श्री नाथ जी की चरण कमल बादका को नमस्ते नमाम्यहम् इति अघोर गायत्री ॥

## अथ टहलवा गायत्री

ओं गुरु जी महादे पार्वती बन में आये आके मढ़ी छवाये मढ़ी छवा के पांच बृक्ष लगाये उन सबका तीर्थ अपाया ब्रह्मा विष्णु ईश्वरीमाया जो ले नारद को फरमाया भर पात्र नारद को ल्याये ऋद्ध सिद्ध कुबेर जी ल्याये सब सन्तों को बोल पठाया अपनी २ ठौर बिठाये जग मोतियन के चौक पुराये पांच पीर गद्दी बिठाये जपे अलख का जाप दर्शन पाये माई का पात्र दिया चलाय तीर्थ को पिलाय के नौ नाथों के बीच में भैरों का रूप सवाया सारे में आधी २ में चौथाई २ में आधी गादी गुरु गोरक्षनाथ नौ नाथ चौरासी सिद्धों ने कोटवाल थरपाया जुगां २ से टहलवा करे गुरां की टहल सत का कूण्डा सन्तोष की ठाली गुरु फरमाया करो कोटबाली इतना टहलवा गायत्री जाप मंत्र सम्पूर्ण हुआ।

## अथ कोट वाली

ओं गुरु जी दक्षिण दिशा दलावत नगरी तहां बसे गुलतान आसण २ कौन बिराजे औघड़ पीर बिराजे औघड़ पीर तुम भी आओ आद माई के शक्खर में आओ अन्दर लेखे अपरम्पार तुम भी आये



जै जै कार दक्षिण दिशा का कौन कोटवाल बोलिये दक्षिण दिशा का हनुमान कोटवाल बोलिये हनुमान कोटवाल तुम भी आओ आद माई के शक्खर में आओ अन्दर लेखे अपरम्पार तुम भी आये जै जैकार हनुमान कोटवाल कहो काहे का पाठ काहे का ठाठ काहे का घोड़ा काहे का तोड़ा काहे का आसन काहे का बासन काहे का कमन्डल कड़ा झोली झण्डा पत्तर फावड़ी देवगुरु को नमस्कार ओं गुरु जी दक्षिण दिशा हनुमान कोटवाल बज्र का पाठ बज्र का ठाठ बज्र का घोड़ा बज्र का तोड़ा बज्र का आसन बज्र का बासन बज्र का कमण्डल कड़ा झोली झण्डा पत्तर फावड़ी देव-गुरु को नमस्कार ॥

ओं गुरु जी पूर्व दिशा को कौन कोटवाल बोलिये पूर्व दिशा का भानू कोटवाल बोलिये, भानू कोट वाल तुम भी आओ आद माई के सक्खर में आओ अन्दर लेखे अपरम्पार तुम भी आये जै जै कार कहो भानू कोटवाल काहे का पाठ काहे का ठाठ काहे का घोड़ा काहे का तोड़ा काहे का आसन काहेका बासन काहे का कमण्डल कड़ा झोली झण्डी पत्तर फावड़ी देवगुरु को नमस्कार ओं गुरु जी पूर्व दिशा का भानू कोटवाल सोने का पाठ सोने का ठाठ सोने का घोड़ा सोने का

तोडा सोने का आसन सोने का बासन सोने का कमण्डल कड़ा झोली झण्डी पत्तर फावडी देवगुरु को नमस्कार ॥

ओं गुरु जी पश्चिम दिशा का चन्द्रमा कोटवाल चन्द्रमा कोटवाल तुम भी आओ आद माई के सक्खर में आओ अन्दर लेखे अपरम्पार तुम भी आये जै जै कार चन्द्रमा कोटवाल कहो काहे का पाठ काहे का ठाठ काहे का घोड़ा काहे का तोड़ा काहे का आसन काहे का बासन काहे का कमण्डल कड़ा झोली झण्डा पत्तर फावड़ी देवगुरु को नमस्कार ॥

ओं गुरु जी पश्चिम दिशा का चन्द्रमा कोटवाल रूपे का पाठ रूपे का ठाठ रूपे का घोड़ा रूपे का तोडा रूपे का आसन रूपे का बासन रूपे का कमण्डल कड़ा झोली झण्डा पत्तर फाबड़ी देवगुरु को नमस्कार ॥

ओं गुरु जी उत्तर दिशा का कौन कोट वाल बोलिये उत्तर दिशा का गरुड़ कोटवाल बोलिये गरुड़ कोटवाल तुम भी आओ आद माई के सक्खर में आओ अन्दर लेखे अपरम्पार तुम भी आये जै जै कार गरुड़ कोटवाल कहो काहे का पाठ काहे का ठाठ काहे का घोड़ा काहे का तोड़ा काहे का आसन काहे का बासन



काहे का कमण्डल कडा झोली झण्डी पत्तर फावड़ो देव गुरु को नमस्कार । ओं गुरु जी उत्तर दिशा का गरुड़ कोटवाल लोहे का पाठ लोहे का ठाठ लोहे का घोड़ा लोहे का तोड़ा लोहे का आसन लोहे का बासन लोहे का कमण्डल कड़ा झोली झण्डा पत्तर फावडी देव गुरु को नमस्कार ॥

ओं गुरु जी आकास लोक का कौन कोटवाल बोलिये आकाश लोक का इन्द्र कोटवाल बोलिये इन्द्र कोटवाल तुम भी आओ आद माई के सक्खर में आओ अन्दर लेखे अपरम्पार तुम भी आये जै जै कार इन्द्र कोटवाल कहो काहे का पाठ काहे का ठाठ काहे का घोड़ा काहे का तोड़ा काहे का आसन काहे का बासन काहे का कर मण्डल कड़ा झोली झंडा पत्तर फावड़ी देव गुरु को नमस्कार । ओं गुरु जी आकास लोक का इन्द्र कोटवाल पवन का पाठ पवन का ठाठ पवन का घोड़ा पवन का तोड़ा पवन का आसन पवन बासन पवन का कमण्डल कड़ा झोली झंडा पत्तर फावड़ी देव गुरु को नमस्कार ॥

ओं गुरु जी पाताल लोक का कौन कोटवाल बोलिये पाताल लोक का शेष कोटवाल बोलिये शेष कोटवाल तुम भी आओ आद माई के सक्खर में आओ

अन्दर लेखे अपरम्पार तुम भी आये जै जै कार शेष कोटवाल कहो काहे का पाठ काहे का ठाठ काहे का घोड़ा काहे का तोड़ा काहे का आसन काहे का बासन काहे का कमण्डल कडा झोली झंडा पत्तर फावड़ी देव गुरु को नमस्कार। ओं गुरु जी पाताल लोक का शेष कोटवाल बक का पाठ बक का ठाठ बक का घोड़ा बक का तोड़ा बक का आसन बक का बासन बक का कमण्डल कड़ा झोली झंडा पत्तर फावड़ी देव गुरु को नमस्कार ॥

ओं गुरु जी मृत लोक का कौन कोटवाल बोलिये मृत लोक का भैरों कोटवाल बोलिये भैरों कोटवाल तुम भी आओ आद माई के सक्खर में आओ अन्दर लेखे अपरम्पार तुम भी आये जै जै कार भैरों कोटवाल कहो काहे का पाठ काहे का ठाठ काहे का घोड़ा काहे का तोड़ा काहे का आसन काहे का बासन काहे का कमण्डल कड़ा झोली झंडा पत्तर फावड़ी देव गुरु को नमस्कार। ओं गुरु जी मृत लोक का भैरों कोटवाल मृतका का पाठ मृतका का ठाठ मृतका का घोड़ा मृतका का तोड़ा मृतका का आसन मृतका का बासन मृतका का कर मण्डल कड़ा झोली झंडा पत्तर फावड़ी देव गुरु को नमस्कार ॥



## अथ ज्वाहरा बीजने का मन्त्र

ओं गुरु जी कौन नगरी कौन प्रधान कौन पुरुष के थापे थान बोओ ज्वाहरा करा जाप रक्षा करे ओ शंभू यती गुरु गोरक्षनाथ।

## अथ पल्लू मन्त्र

ओं जपो जाप कटो पाप अन्त वेले माई न बाप गुरू सम्भालो अपना आप कर परवालों पल्लू पकड़ो जपो तपो सिद्धों का नाम जिन सत गुरू पूरा जाणिया सो जपे वाले का नाम, जले बाला थले बाला रूखे बाला बृक्षे बाला, बाटे बाला घाटे बाला सत श्री शंभू जती गुरू गोरक्षनाथ जी आय आप सोहं फट् स्वाहा।

ओं अखा आया शाम का मेरी बे अनतड़ी सचियार, सो क्यों फिरन अकेलड़े जिनका बेली कर्तार, जेते आखे तेते राख, ओं भूर २ महा भूर, रात का राखा चन्द्रमा दिन का राखा सूर, साध होके राह चले कुराह चले कुभैसरा पांच महेश्वर आज्ञा करे तो चकर छोड महेश्वरा ओं गंगा जमना सरस्वती काशी और केदार उदक चेतो कलश का पाओ मोक्ष द्वार।

## मोक्ष गायत्री

ओं सोहं का सकल पसारा अक्षय योगी सब से न्यारा सद्रांला तोड़ चौदह चौकी यम की तोड़ हंसा ल्याऊं मोड हंसा तो ला कहां धरे अलख पुरुष की सीम, हंस तो निर्भय भया काल गया सिर फोड निराकार की जोत में रती न खन्डी हो, कौन २ साधु भया ब्रह्मा, विष्णु, महेश, वे साधु ऐसे भये यम न पकड़े केश, मोक्ष गायत्री जाप सम्पूर्ण भया ।

## काल गायत्री

ॐ काल सोहम् काल काल काल महाकाल अजर काल वज्र काल, जून काल, भवंर काल, अमर काल, अन-भय काल, निर्भय काल, जोत काल, सर जीवन काल हम को रख दुष्ट को भख, दुष्ट मर जाई, काल परम हंस का सुमरण करे तीन चूल्लू पानी के भरे संसार भरे संसार फिरे निर्भय योगी अनभय तरे बारह काल हमारे भाई हमको छोड और को लेजाई, जीवन मोक्ष काल की पाई, इतना काल परम हंस गायत्री जाप सम्पूर्ण भया ।

ॐ इति समाप्तम् ॐ.

—❀❀—

## ❀ भगवती स्तुति ❀

आदि शक्ति सो जगत जननी,
ज्योति रूप योगेश्वरी ।
कंचन भवन विराजे गिरजा,
हिमालय नन्दिनी ईश्वरी ।
श्री देवी जी के चरण प्रणाम्यहम,
श्री ज्वाला जी के चरण प्रणाम्यहम्
श्री जगदम्बा जी के,
चरण प्रणाम्यहम ।। १ ।।
पर्वत वासिनी सब सुख रासिनी,
असुर विनाशिनी कालिका ।
जन रक्षपाल दयालु दुर्गे सेवक की,
प्रति पालिका श्री देवी० ।। २ ।।
ध्वजा अनन्त झुलंत निशदिन,
घंटम की ध्वनि अति घनी ।
ब्रह्मा, विष्णु, महेश सेवत,
राजा, रंक, निर्धन, धनी श्री देवी० ३
दुख हरन सुख करण देवी,
जरा मरण भय तारिणी ।
जय जग वंदिनी असुर निकंदनी,
दैत्य दुष्ट विनाशिनी श्री देवी० ।। ४।।
ऋद्धि सिद्धि दोउ चंवर झुलावे,
मंगल गावे चौसठ योगनी ।

चौरासी सिद्ध करत सेवा,
ध्यान धरे सुर नर मुनी श्री देवी० ५
सत्युग मांही देवी सती कहाई,
शिव शंकर घर शंकरी ।
महिशासुर भस्मासुर मारो मैय्या,
कर धर शूल भयंकरी श्री देवी । ६
त्रेतायुग में जनक दुलारी,
रघुवर गृह सीता सती ।
रावण मार विभीषण राखियो,
चंवर करे लक्ष्मण जती श्री देवी ७
द्वापर में राजा धर्म युधिष्ठिर,
माता जी की पूजा करी ।
दुर्योधन दल निर्बल कीनो,
पारथ की चिन्ता हरी श्री देवी० ८
कल युग में कलिमल हरनी माता,
नगर कोट मन भायो है ।
शाहन के पत शाह अकबर,
सुवर्ण छत्र चढ़ायो है श्री देवी । ९
श्री जी का अष्टक पढ़त निश दिन,
कोटि देव रक्षा करें ।
कोप, ताप, संताप, निवारण,
भवसागर से वह तरे श्री देवी० । १०

*-*-*-*